सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150, 7078394060/ 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी
-9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
बालोद्यान
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259

पत्रिका को अक्तूबर-दिसम्बर 2020 अंक में हिमाचल कला संस्कृति एवं भाषा अकादमी के आर्थिक सहयोग के लिए सम्पादक मण्डल आभारी है।

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्यवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल
(उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150, 7078394060,
7055336168,
Email-asha.shaili@gmail.com

मूल्य-एक प्रति 25/-,
वार्षिक 100/-,
आजीवन 1000/-,
संरक्षक सदस्य 5100/-

संरक्षक सदस्य:-
डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244, शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी-09716317725, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव- 09212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव-9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम- 9447375381, **डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह-7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा-9935353480, डॉ. मदन मोहन ओबेराय,** राम मूरत चौहान-**9415885622,** डॉ. नीतिका नैन-9536379106,

परामर्श:-
डॉ. श्यामसिंह 'शशि'-09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह-09810685549
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक' -07417619828
विशेष सहयोगी
पंकज बत्रा (लालकुआँ) -9897142223, निर्मला सिंह बरेली, -9412821608 सत्यपाल सिंह 'सजग' (लालकुआँ) -09412329561, राधेश्याम यादव -80066722221, दर्शन 'बेज़ार' (आगरा) -9760190692, डॉ. राकेश चक्र (मुरादाबाद) -9456201857, सूरत भारती, (हि.प्र.) -09418272934 कृष्णचन्द्र महादेविया, (मगडी हि.प्र.) -09857083213 , डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042, स्नेहलता शर्मा (लखनऊ)-9450639976 सुषमा भण्डारी, (दिल्ली)-09810152263, निरुपमा अग्रवाल (बरेली) -9412463533, आलोक भूषण त्रिपाठी-8423099899

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैल-सूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

भारतीय स्टेट बैंक शाखा तरुवाला, पाँवटा साहब (हि.प्र.) कोड सं. IFSC; SBIN 0000703 खाता सं 30116574461 में जमा करायें।

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

विधा	लेखक	पृष्ठ
वैचारिकी:-		
धरोहर:-पुरातन नगरी सिरमौर लोकगीतों के आइने में	-डॉ. ईश्वर दास राही	6
लेख:- परंपराओं की आड़ में विवेक की तिलांजलि	-डॉ. एल.सी. शर्मा	9
रिश्तों को जोड़ती रस्म 'न्यूंद्रा'	-पवन चौहान	10
शोध पत्र:-हिमाचल की हिन्दी कहानी और बद्री सिंह.....	- नेम चन्द ठाकुर	12
कहानी:-चिड़ियाघर	-श्रीमती सुदर्शन पटयाल	16
रुबल नहीं आया	-जगदीश बाली	19
लघुकथा:-अपना अधिकार -आशा शैली, सौतेला बाप	-कृष्णचन्द्र महादेविया	21
कचरा बीनने वाली	-बबिता ओबेरॉय	22
संस्मरण:-हिमाचल हिन्दी, साहित्य और पत्रकारिता.....	-भारती कुठियाला	23
काव्य जगत:- हे दिसम्बर	-पूर्णिमा ढिल्लन-8,	
विचलित यह मन मेरा -हरि कृष्ण मुरारी, हरी होती है जिजीविषा -सीताराम शर्मा 'सिद्धार्थ'		25
माँ मुझे क्यों मार डाला -बचन सिंह घटवाल, एक तमन्ना -स्नेह लता नेगी		26
राख -प्रियंवदा शर्मा, जीवन-वीरेंद्र शर्मा, बस तुम्हारी याद -उषा किरण कपूर		27
ग़ज़लें:-		
मोनिका शर्मा, नवीन शर्मा, पोमिला ठाकुर, जाहिद अबरोल,		28
प्रवीन राय, 43, जावेद पठान सागर-51		
गीत:-		
तोड़ो निद्रा हे योगेश्वर -शशि कान्त गीते, मैं यहाँ मेरे पिया हैं पार -चिर आनन्द		29
बदरिया बरसो मेरे देश -डॉ. रीता सिंह, नये साल में-ज्ञानप्रकाश पीयूष		30
बालोद्यान:-		
कहानी-सफलता का राज	-अमर सिंह शौल	31
कविता-मिठाई-डॉ. प्रत्यूष गुलेरी, फूल-रूपाली ठाकुर		31
मधुमक्खी रानी-कृष्णा ठाकुर कविता, माँ-बाप भगवान...-कुमारी नेहा ठाकुर		32
भारत दर्शन:-बहुत ही खूबसूरत है ऐनण माता मंदिर	-सुरेश कौंडल	33
व्यंग्य-	-डॉ. दलजीत कौर	35
हमारे प्रकाश स्तम्भ- : शक्तिप्रसाद सकलानी	-डॉ. प्रभा पन्त	37
शोध पत्र:- डॉ. परशुराम शुक्ल की बाल कविताएँ, राष्ट्रीय चेतना -चन्द्रावती जोशी		41
अनुवाद:- शेत्रुंजी के किनारे	**-लेखक: स्वर्गस्थ झवेरचंद मेघाणी**	
	अनुवादक: रजनीकान्त एस.शाह	44
स्वाभिमान के बहाने	-शिवा धरावेश	50
समीक्षा:-दर्द की अनकही दास्तां	-सुशील भारती	51
सुनहरी भोर की ओर	-शत्रुघ्न सिंह चौहान	52

कुबेर को बहुत अधिक धन होने के कारण नहीं बल्कि कल्याणकारी होने के कारण देवता का दर्जा प्राप्त हुआ है।

शैल-सूत्र
अक्तूबर-दिसम्बर-2020

यात्रा के तेरह वर्ष

सम्पादकीय

इस अंक के साथ ही हमारी-आपकी पत्रिका चौहदवें वर्ष में प्रवेश करने वाली है। जी हाँ, रेशमा जवान हो गई है। पत्रिका को सफलता के साथ तेरह वर्ष का सफर पूरा करने पर बधाई नहीं देंगे आप? तेरह वर्षों के संघर्ष में हमने पाया ही पाया है। आज शैलसूत्र लोकप्रियता की जिस सीढ़ी पर है वहाँ तक पहुँचने में शैलसूत्र के सहयोगियों का जितना श्रम है उतना ही योगदान सुधी साहित्यकारों का भी है। पत्रिका से जुड़ा हमारा लेखक वर्ग जो हमें बिना किसी पारिश्रमिक के उच्चस्तरीय और उपयोगी सामग्री बराबर उपलब्ध करवा रहा है उसके लिए पत्रिका परिवार हृदय से विद्वान रचनाकारों का आभार व्यक्त करता है। मुझे अनुभव होता है कि पत्रिका ने न केवल भारत अपितु प्रवासी लेखकों को भी अपने सूत्र से जोड़ा है। आज दूसरे प्रदेशों से एवं दूसरी भाषाओं से अनूदित रचनाएँ भी शैलसूत्र में प्रकाशनार्थ उपलब्ध हो रही हैं, यह पत्रिका की बड़ी सफलता मानी जाएगी। पिछले कुछ अंकों में हमने कुमाउंनी भाषा के समृद्ध भण्डार से कुछ अनुदित सामग्री पाठकों के लिए उपलब्ध कराई थी, फिर पंजाबी और कन्नड़ की कहानी और इस अंक में गुजराती से अनूदित कहानी आप लोगों के सन्मुख है। इस प्रकार के अनुवाद से जहाँ हमारा परिचय हिन्दीत्तर भाषाओं के साहित्य से होता है, वहीं अनुवाद हमारे हिन्दी साहित्य के भण्डार भी भरता है। हमारा प्रयास रहेगा कि हम इस कार्य को जारी रखें।

हिमाचल प्रदेश साहित्य के क्षेत्र में युगों से अग्रणी रहा है। यहाँ विपाशा के तट पर वेद व्यास जैसे ऋषियों ने वेदों और पुराणों की रचना की है तो आज के युग में भी साहित्य के दृष्टिकोण से हिमाचल किसी बात में पीछे नहीं है।

हमने इससे पूर्व भी शैलसूत्र का एक अंक हिमाचल पर केंद्रित किया था, यह अंक फिर से हिमाचल पर केंद्रित है। आप सब को अंक कैसा लगा यह जानने का अब हमारे पास कोई साधन नहीं है। क्योंकि अब कोई प्रतिक्रिया ही नहीं देता, परन्तु हाँ। फोन आते हैं और पत्रिका की निरंतर बढ़ती मांग हमें आश्वस्त अवश्य करती है कि हम सही दिशा में जा रहे हैं।

इस यात्रा की सफलता के लिए मैं आर्थिक सहयोग करने वालों को कैसे भूल सकती हूँ, जहाँ तक हो सका मुझे हिमाचल से आर्थिक सहयोग भी प्राप्त होता रहा है, अन्यथा पत्रिका को यहाँ तक लाना सम्भव ही नहीं हो पाता। इसके लिए मैं आईआई आर.डी. शिमला के निदेशक डॉ. एल.सी. शर्मा और सूचना एवं लोक सम्पर्क विभाग शिमला की आभारी हूँ तो लालकुआँ की प्रशासनिक इकाइयों का भी कम योगदान नहीं रहा। ओ.एन.जी.सी. देहरादून के सहयोग को नहीं भुलाया जा सकता। वर्तमान में इस दायित्व को आयुष्यमान चन्द्रभूषण तिवारी बड़ी कुशलता से निभा रहे हैं। पत्रिका से जुड़े सभी सदस्य अपने हर प्रकार के सहयोग के लिए सदैव उपस्थित हैं। उनका आभार कैसे कर सकती हूँ, वे तो मेरे दायें-बायें बाजू हैं।

आशा शैली

क्षेत्रीय सहयोगी

1. Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex,
Bye-pass Road, shanan,
Sanjauli, Shimla-6 (H. P.)
mo. 09418014761
iirdsml@gmail.com

2. अंजना छलोत्रे 'सवि',
द्वारा श्री विजय देशमुख, माधव कालोनी,
सोडलपुर रोड, टिमरनी, जिला हरदा-461228
(म.प्र.)
मो. 08461912125
anjana.savi@gmail.com

3. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

4. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर, कांगड़ा
(हि. प्र.) 7018516119, 9816181836

5-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला,
पाँवटा साहिब, जि. सिरमोर-173025 (हि.प्र.)
मो. 08894892999

6. **चन्द्रभूषण तिवारी**
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज,
(मऊआईमा) प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102
cbtiwari04091966@gmail.com

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर,
मथुरा- **(उत्तर प्रदेश)** 9412727361,
ईमेल- drdinesh57@gmail.com

8. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया, गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222
मो. 7767943298

9. केरल
Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G.
Unichira road,
Changampuzha nagar, post-Kochi-33', Kerala. 9447375381

10- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross,
Shreepad Nagar,
Near Rani Chennamma Nagar,
Dharwad, Karnatak.
mo-7619164139

11. डॉ. परमानन्द तिवारी (प्राचार्य)
शास. तुलसी महाविद्याल अनूपपुर,
जिला अनूपपुर (म.प्र.)
मो. 9424931012
Email...hegtdcano@mp.gov.in

देवभूमि हिमाचल और संस्कृति

शैलसूत्र से जुड़े बहुत अधिक समय हालांकि नहीं हुआ फिर भी पत्रिका के माध्यम से अपने विचार आप सभी मनीषियों तक पहुँचाकर सुखद अनुभव होता है। इस बार का अंक चूंकि हिमाचल के साहित्य अथवा हिमाचल के सम्बंध पर है इसलिए यदि हिमाचल की देव परम्परा पर बात न की जाए तो विषय अधूरा ही रह जाएगा। हालांकि मेरा जाना हिमाचल में कम ही हो पाया है फिर भी जितना हिमाचल के बारे में जान पाया हूँ वह अभिभूत करता है। हाँ, हिमाचल देवभूमि है क्योंकि यहाँ हर गाँव में देव मन्दिर आपको मिलेंगे। आप कहेंगे, यह कौन-सी बड़ी बात हुई? जी हाँ यही तो हिमाचल की विशेषता है। यहाँ आपको यक्ष और नाग मन्दिर भी मिलेंगे, जिनके बारे में हम शास्त्रों में पढ़ते हैं। पग-पग पर आपको बौद्ध मन्दिर मिलेंगे। हर कदम पर आपको महाभारत से जुड़ी कोई न कोई कहानी मिल जाएगी। और तो और, यहाँ हिडिम्बा और घटोत्कच के मन्दिर भी मिलते हैं और दुर्योधन के भी। कदम-कदम पर पौराणिक साक्ष्य उपलब्ध होते हैं और इसी का नाम हिमाचल है।

एक ओर हिमाचल को जहाँ देवभूमि कहा जाता है वहीं उत्तराखण्ड को भी देवभूमि कहा जाता है। विषय विचारणीय है कि पहाड़ों को ही देवभूमि क्यों कहा जाता है? जहाँ कहीं भी कोई प्रसिद्ध देव स्थान होता है वह बहुतायत में कठिन पर्वतीय शृंखलाओं के बीच ही होता है। परन्तु ऐसा भी नहीं है कि मैदानी क्षेत्रों में देवस्थान नहीं होते। अवश्य होते हैं फिर भी ऐसे क्षेत्रों को देवभूमि नहीं कहा जाता।

पहाड़ों में हर गाँव किसी न किसी देवता के साथ जुड़ा हुआ है। पर्वतीय संस्कृति की विशेषता है कि यहाँ जन कल्याण के कार्य करने वाले महामानवों को देवता बना कर युगों-युगों तक पूजा जाता है, यह परम्परा हिमाचल और उत्तराखण्ड में समान रूप में देखी जा सकती है। वास्तव में देखा जाए तो कुछ दिव्य विभूतियों के तप, त्याग और अद्वितीय कार्यों को ऐसे स्थानों की आवश्यकता सदैव रही है जहाँ उनके कार्य में कोई बाधा न पहुँचा सके और वे अपने लक्ष्य तक निर्विघ्न यात्रा कर सकें। इसीलिए उन्होंने आमजन की पहुँच से दूर अपने निवास के लिए ऐसे ही दुर्गम स्थानों को चुना, फिर चाहे वह हिमाचल हो या उत्तराखण्ड अथवा कोई और पर्वतीय क्षेत्र। ऐसे महामानव जहाँ भी रहे, स्थानीय निवासियों के लिए भरसक सहायक रहे और देवत्व पद पर आसीन हुए।

ध्यातव्य है कि जहाँ प्रलय के बाद सृष्टि का उद्गम स्थल मनाली को कहा जाता है, वहीं यह दावा उत्तराखण्ड के माणा गाँव से भी जुड़ा हुआ है। परन्तु हिमाचल के साथ तो इतिहास का भी जुड़ाव है। यह सर्व विदित है कि महाभारत का क्षेत्र सम्पूर्ण उत्तरी भारत रहा है। इतिहास पर दृष्टि दौड़ायें तो दिल्ली और मेरठ के आस-पास के क्षेत्र ही पाण्डवों के क्षेत्र रहे हैं। कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि अन्तिम निर्णय के लिए जानी जाती है। इन्द्रप्रस्थ से निकलकर पाण्डव वनवास काल और अज्ञातवास के समय हिमाचल के दुर्गम क्षेत्रों में तेरह वर्ष तक भटकते रहे। विशेष अज्ञातवास का एक वर्ष। इन्हीं पहाड़ों में भटकते हुए पाण्डवों ने स्थान-स्थान पर मन्दिर और अन्य भवन बनवाये जिनके अवशेष आज भी देखे जा सकते हैं। फिर उनका अंत भी इन्हीं पहाड़ों में हुआ। यही हिमाचल वेदव्यास की कर्मभूमि रही। हिमाचल का गौरव अलग ही कीर्तिगाथायें कहता प्रतीत होता है। मनाली के पास ही वेदव्यास का मन्दिर है। गर्म पानी के कुण्ड हैं, सतलुज, व्यास और रावी नदियाँ हैं जो अपने जल से धरती को ऊर्जावान बनाती हैं। हिमाचल की धरती का सौंदर्य अपने आप ही एक अनजाने भक्तिभाव को जन्म देता है। जहाँ वेदव्यास सदेह विचरण करते हों वहाँ भला साहित्य कैसे नहीं पनपेगा? अतः कहना नहीं होगा कि हिमाचल की उर्वरा भूमि साहित्य के लिए भी उर्वरा रही है और रहेगी, यही हिमाचल की संस्कृति है।

चन्द्रभूषण तिवारी

पुरातन नगरी सिरमौर लोकगीतों के आइने में

-डॉ. ईश्वर राही

प्राचीन काल में सिरमौर रियासत का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। यह सबसे प्राचीन रियासत थी जो जलंधर खड्ड के पूर्वी छोर पर और यमुना के पश्चिम में स्थित थी। जिसकी लम्बाई पूर्व से पश्चिम 43 मील और उत्तर से दक्षिण 50 मील थी। वैदिक साहित्य में सिरमौर के लिए 'कुलिन्द' नामक जनपद का उल्लेख मिलता है। भौगोलिक स्थिति के अनुसार कुलिंद ब्रह्मवर्त के उत्तर में नगाधिराज के किसी पर्वतीय आंचल में स्थित था। इसी जनपद की एक मुख्य नगरी की भौगोलिक स्थिति भारत के उत्तर-पश्चिम में बताई जाती है। इस भौगोलिक परिचय के अनुसार वर्तमान 'पाँवटा साहिब' के उत्तर-पश्चिमी छोर पर 'राजवन' के निकट एक प्राचीन ध्वस्त नगरी 'सिरमौर' की वर्तमान स्थिति में बिल्कुल सही ठहरती है। यह पुरातन नगरी सन् 1082 ई. (संवत 1139) की बाढ़ में नष्ट हो गई थी। सिरमौर के इस ध्वंसावशेष-नगर से लगभग एक मील दक्षिण-पूर्व में राजवन है, जिसे राजा सुभंश (अथवा शुभांश) प्रकाश ने उक्त बाढ़ के तेरह वर्ष बाद 1095 ई. (27 फाल्गुन से 1252)[1] में पुनर्निमाण के बाद अपनी राजधानी बनाया था।

इस प्रकार सिरमौर हिमाचल प्रदेश का एक अति प्राचीन जिला है जो 15 अ प्रेल 1948 ई. को पहाड़ी रियासतों के टूटने के उपरान्त हिमाचल में विलय हुआ। सिरमौर के पूर्व में उत्तर प्रदेश, दक्षिण में हरियाणा, उत्तर में शिमला तथा पश्चिम में जिला सोलन है। समुद्रतल से इसकी ऊँचाई लगभग एक हज़ार फुट से लेकर 12,000 फुट तक है।

सिरमौर जिले के मुख्यालय नाहन की स्थापना सन् 1621 ई. में राजा करम प्रकाश ने की थी। यह नगर पुरानी सिरमौर रियासत की राजधानी भी रहा है। नाहन की समुद्रतल से ऊँचाई 933 मीटर है। इस जिले में यमुना, गिरी, टोंस, मारकण्डा, बाता, जलाल, घाघर आदि नदियाँ बहती हैं।

ह्यूनत्सांग के अनुसार 'सिरमौर' नामकरण के विषय में विद्वानों की अनेक मान्यतायें हैं। प्रसिद्ध यात्री ह्यूनत्सांग ने इसका नाम श्रुहन अथवा सू-हि-किन-ना लिखा है। ह्यूनत्सांग स्वयं भी इस प्रदेश की राजधानी में कुछ दिन ठहरा था। उसने इस राज्य के अन्तर्गत दयालगढ़, माण्डलपुर, रौहरा नाला व बूड़िया आदि कुछ नगरों का भी वर्णन किया है। ये सभी नगर थानेसर से सिरमौर की राजधानी तक पहुँचते-पहुँचते उसके रास्ते में आये थे। उस समय इस राज्य का क्षेत्रफल 1000 वर्ग मील था। गिरी व यमुना नदियाँ इसी के बीच से बहती थीं। यही श्रुहन शब्द बाद में बिगड़ते-बिगड़ते सिरमौर बन गया।

एक मत यह भी है कि चन्द्रगुप्त मौर्य ने मगध के नन्दवंश को समाप्त करने में पंजाब व मगध के बीच के राज्य कुलिंद (वर्तमान सिरमौर) पर्वतीय राज्य की सहायता ली थी। यह राज्य मौर्य साम्राज्य के उत्तरी भाग में शीर्षस्थ स्थिति पर था। अत: चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने प्रति किये गये उपकारों से कृत-कृत्य होकर यहाँ के राज्याध्यक्ष को एक सम्मानित उपाधि शिरोमौर्य अर्थात् 'मौर्य साम्राज्य का शीर्षस्थ' से सम्मानित किया। कालान्तर में भाषा विज्ञान के सैद्धान्तिक आधार पर वर्णविपर्यय होकर इसका नाम 'शिर-मौर्य' के स्थान पर सिरमौर पड़ गया।

कुछ लोगों के विचार से ये नामकरण राजा शालिवाहन द्वितीय के पौत्र राजा रसालु के पुत्र सिरमौर के नाम पर किया गया है। राजा रसालु से सम्बन्धित कुछ स्थान वर्तमान में भी यहाँ उपस्थित पाये जाते हैं जिनमें नाहन के निकट ही राजा रसालु का टिब्बा भी है। किसी स्थान अथवा नगर का नामकरण सदा से ही किसी खानदान व परिवार के मुखिया के नाम पर किया जाता रहा है यह प्रवृत्ति सम्पूर्ण भारत में पाई जाती है। इसी प्रवृत्ति के कारण शासक सिरमौर के नाम पर भी इसका नाम सिरमौर पड़ा हो तो काई आश्चर्य नहीं।

नामकरण की इस परम्परा में एक किवंदती भी है कि यह राज्य पड़ौसी राज्यों में सबसे अधिक शक्तिशाली था। जिस कारण इसे सिरमौर नाम प्राप्त हुआ। जिसका अर्थ है (सिर का मुकुट या ताज)।

उपर्युक्त मतों से पता चलता है कि सिरमौर शब्द की व्युत्पत्ति अनेक अटकलों में उलझी हुई है। मेरे मत से पाँवटा साहिब से 16 कि.मी. उत्तर-पश्चिम में सिरमौरी ताल नामक स्थान गिरी नदी के बाईं तरफ स्थित है। ऐसा समझा जाता है कि किसी समय ये स्थान सिरमौर के राजाओं की राजधानी

रहा है और उन लोगों का बहुत यहाँ बड़ा दुर्ग था।

इसी प्रकार सिरमौर का नामकरण सिरमौर ताल से भी मालूम पड़ता है। पहाड़ी बोली के सिरमौरी शब्द का विश्लेषण करने पर पता चलता है कि लोग आज भी इसे ठेठ पहाड़ी में 'सरमऊर' बोलते हैं जिसकी उत्पत्ति 'सर' यानि कि तालाब और मौर 'मऊर' यानि महल से हुई है अर्थात् तालाब के किनारे महल। बाद में वर्ण व शब्द परिवर्तन से सर-मऊर का सिरमौर नाम पड़ गया, परन्तु प्राचीन लिखित साक्ष्यों के अभाव में किसी भी निर्णय पर पहुँचना मुश्किल कार्य है। उपर्युक्त नामकरणों के इतिहास सिरमौरी ताल सम्बन्धित साक्ष्य अधिक सही जान पड़ता है।

प्रत्येक प्राचीन और ऐतिहासिक स्थान की तरह सिरमौर के साथ भी दंतकथाएँ जुड़ी हुई हैं। एक किवदंती है कि पूर्व में यह राजधानी एक नटनी के श्राप के कारण डूब गई थी। उक्त श्राप के शब्द आज भी लोक में बोलचाल की भाषा में इस प्रकार प्रचलित हैं। 'आर टोका पार पोका, डूब मरो सिरमौरा रे लोका।' कहते हैं कि एक बार एक नटों की टोली राजा सिरमौर के राज्य में आई। उस टोली की एक स्त्री नट नृत्य में बहुत कुशल थी। राजा को असम्भव लगा कि कैसे कोई रस्सी पर नाच सकता है।

प्रदर्शन के लिए राजा ने उससे ये शर्त रखी कि अगर वह एक रस्से पर नाचते हुए पोका गाँव से सिरमौर की टोका पहाड़ी पर आ जाए तो उसे अपने राज्य का आधा हिस्सा दे देंगे। नटी ने शर्त मान ली और कुशलता पूर्वक नाचते हुए नटनी यह करतब पूरा कर सिरमौर की टोका पहाड़ी पर पहुँचने ही वाली थी कि आधा राज्य हाथ से जाने के भय से दीवान जुझार सिंह ने धोखे से रस्सी काट दी। रस्सी कट जाने से नटी नीचे बहती नदी में गिर गई। नटनी नदी में गिरते ही श्राप दे गई, 'आर टोका पार पोका डूब मरो सिरमौरा रे लोका।' कहा जाता है कि इस नटनी के नदी में गिरने पर ही इस नदी का नाम गिरी नदी पड़ा।

सिरमौर में टोका व पोका दो पहाड़ियाँ हैं, जिनके किनारों में दो पत्थरों में आज भी छेद हैं, जिससे ऐसा लगता है कि वहाँ पर रस्सी बाँधी गई होगी।

गीतकार सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा अधिक जागरूक और संवेदनशील होता है। इस संवेदना व जागरूकता की अभिव्यक्ति वह अन्य व्यक्तियों तक पहुँचाने के लिए लोकगीतों की रचना कर लोक मानस की विभिन्न अवस्थाओं का परिचय देता है।

लोकगीत ग्रामीण जीवन की अभिव्यक्ति होते हैं। लोकगीतों में ग्रामीण जीवन की झलक देखने को मिलती है। ग्रामीण लोग अपने मनोभावों को लोक गीतों के माध्यम से ही अभिव्यक्त करते हैं। लोकगीत उसकी प्रसन्नता, सुख, दु:खात्मक अनुभूतियों, कुंठा, तनाव, प्रेम आदि मनोवृत्तियों की अभिव्यक्ति होती है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोकगीतों के महत्त्व को दर्शाते हुए छत्तीसगढ़ी लोक गीतों के परिचय की भूमिका में लिखा है कि ग्राम गीतों का समस्त महत्त्व उनके काव्य सौन्दर्य तक सीमित नहीं हैं, बहुत महत्त्वपूर्ण कार्य है, विशाल सभ्यता का उद्घाटन जो अब तक या तो विस्मृति के समुद्र में डूबी हुई है या गलत समझ ली गई है.... ग्राम गीत इस सभ्यता के वेद हैं.... सौभाग्यवश वेदों ने बाद में श्रुति से उतरकर लिपि का रूप धरण कर लिया, पर ग्राम गीत अब भी श्रव्य ही हैं। लोक साहित्य में लोकगीत का फलक अत्यन्त विस्तृत है। जिस प्रकार वेदों द्वारा आर्य सभ्यता का ज्ञान होता है उसी प्रकार ग्राम गीतों द्वारा आर्य पूर्व सभ्यता का ज्ञान होता है।

सिरमौर के पौराणिक ऐतिहासिक लोकगीतों में सिरमौर के वीरों की पौराणिक ऐतिहासिक गाथाएँ व सिरमौरी जनता के वीरगाथात्मक ऐतिहासिक आन्दोलनों की विस्तृत व्याख्या मिलती है, यहाँ स्थानाभाव के कारण एक ही उदाहरण से काम चला रहे हैं। ऐसे लोकगीतों को वार का नाम दिया जाता है। यह होकू रावत की वार उदाहरणार्थ-

होकू तहसील रेणुका जी संगडाह के गाँव घंडूरी का निवासी था। उस समय भारत में मुगलों का शासन था। सिरमौर रियासत में महाराजा महीप्रकाश राज करते थे। महाराजा महीप्रकाश का पुत्र मेदिनी प्रकाश अभी छोटा सा ही था कि महाराज की मृत्यु हो गई। अब प्रशासन की बागडोर महीप्रकाश के मंत्री दुल्लू मेहत्ता के हाथों में आ गई। दुल्लू मेहत्ता की निरंकुशता के कारण सिरमौर की जनता पर मनमाने ढंग से कर व हरजाने वसूले जाने लगे। कर न देने पर लोगों को घोर यातनाएँ व कारावास की सजा भुगतनी पड़ती थी। दु:खी होकर लोगों ने होकू रावत से सुझाव मांगा।

'थाणी गाणी बोलो ठाहरी, देवी बोलो दुर्गा माई
दो चार देणे आखरो बोलो मियां होकू रे लाई

देवी दुर्गा माता की स्तुति के बाद होकू मियां की लोकगाथा गाई जा रही है। होकू मियां ने राजा के वजीर दौलू मेहता के अत्याचारों के विरोध में ग्राम देवामानल में देवता के प्रांगण में एक जनसभा में विचार-विमर्श किया।

प्रस्तुत लोकगीत में रजवाड़ाशाही में राजाओं के कारिन्दों द्वारा जनता पर किये जाने वाले अत्याचारों व राज और धन

लोलुप प्रवृत्तियों को उजागर किया गया है। होकू मियां ने दुल्लू मेहता के अत्याचारों के खिलाफ सेना का गठन किया है। नाहन चौगान में अपनी फौजों को खड़ा करके होकू उनसे क्रान्तिकारी बातें कर रहा था और चौगान में बन्दूकों से सूचना हेतु फायर किये। गोली चलने की आवाज सुनकर राजा के वजीर दुल्लू मेहता का मन घबरा गया और उसने समझोते के प्रतीक सफदे झण्डे को लेकर अपने आदमी सुदामा को चौगान में भेज दिया।

इस लोकगीत में होकू रावत की रजवाड़ाशाही प्रवत्ति के खिलाफ खीझ, आक्रोश व विद्रोह की भावना का चित्रण हुआ है। जनता के अधिकारों के लिए सत्ता वर्ग से टकराना होकू की वीरता व जागरूकता का प्रतीक है।

मेहत्ता वजीर ने धोखे से चाल चली और सुलह व शान्तिवार्ता का झांसा देकर होकू रावत को राजदरबार में बुलाया और धोखे से मरवा दिया। इसी प्रकार '**नोत राम की हार**' जनश्रुति के अनुसार सिरमौर रियासत में राजा जगत प्रकाश का शासन काल था और दिल्ली में गुलाम कादिर रोहिला का। दिल्ली के शासक ने सिरमौर की समृद्धि व पाँवटा दून के उपजाऊपन को देखकर पाँवटा क्षेत्र पर आक्रमण कर दिया जिससे राजा जगत प्रकाश भयभीत हो गया। कहा जाता है कि उसने सिरमौर के वीर यौद्धा नोत राम नेगी को संदेश भेजा और युद्ध के जीतने पर कालसी तहसील को (अब उतराखण्ड राज्य में है) देने का वादा करके वजीरी की पेशकश की। इस वीर नोत राम ने नाहन के नजदीक कटासन नामक स्थान पर रोहिला से युद्ध किया और परास्त कर खदेड़ दिया।

वार के अनुसार 'मुगल सरदार गुलाम कादिर रोहिला अपने नौ लाख सैनिकों व दो लाख घोड़ों के साथ आया देख, राजा सिरमौर जगत प्रकाश ने अपनी फौज के आला अफसरों को बुलाकर पूछा कि क्या कोई ऐसा वीर है जो मुगलों की इस विशाल सेना से लड़ेगा।'

यहाँ यह सिद्ध होता है कि मुगल शासकों की नज़र हमेशा ही पर्वतीय राज्यों पर उनकी समृद्धि के कारण रही है। मुगल सम्राटों की लालची प्रवृत्ति का चित्रण इन लोकगीतों में बहुत स्पष्टता से हुआ है कि किस प्रकार वह अपनी राज्य व धन की भूख मिटाने के लिए किसी भी राज्य पर चढ़ाई करते थे। सिरमौर के शासकों की मुगलों से राज्य की रक्षा करने की असमर्थता व उनकी चिंता की अभिव्यक्ति हुई है।

राजा सिरमौर नेगी नोतराम को मुगल सरदार गुलाम कादिर रोहिला का सिर काट कर लाने पर इनाम स्वरूप कालसी तहसील व राज्य की वजीरी वचन दिया।

नेगी नोतराम मुगल सरदार के तम्बू में जाकर कहता है कि तू यहाँ से अपना तम्बू उखाड़कर भाग जा। मैं राजा नाहन की ओर से आया हूँ परन्तु मुगल सरदार कहता है कि वह तो इस पाँवटा क्षेत्र में अपना राज्य स्थापित करके ही रहेगा। उसकी इस बात को सुनकर नेगी नोतराम का वीर खून उबलने लगा और वह तत्क्षण मुगल सरदार के साथ भिड़ गया। उसने अपनी तलवार का भरपूर वार किया और मुगल सरदार का सिर तुरन्त ही धड़ से अलग कर दिया। प्रस्तुत लोकगीत में सिरमौरी वीरों की वीरता, राष्ट्रभक्ति व इस लोकगीत में वीर-रस का सुन्दर उदाहरण मिलता है। जनश्रुति है कि नेगी जब यमुना पार करता है तो कोई अज्ञात व्यक्ति उसे धोखे से मार देता है जिसे तत्कालीन रजवाड़ाशाही का षड़यन्त्र होने का संदेह होता है।

इसी प्रकार अन्य वीरों की वारें भी जो लोकगीतों का हिस्सा हैं, क्षेत्र विशेष की तत्कालीन व्यवस्था, रहन-सहन एवं अन्य ऐतिहासिक घटनाओं का साक्षात्कार सहज ही हमें अपने देश के किसी भी क्षेत्र के गौरवशाली अतीत से जोड़ती हैं। यही हमारी धरोहरें हैं, जिनको जान-समझकर हम अपनी सभ्यता और संस्कृति पर गर्व का अनुभव कर सकते हैं।

डॉइट नाहन, डाकघर नाहन,
जिला सिरमौर-173001 (हि.प्र.)
मो. 9816411404

हे दिसम्बर- पूर्णिमा ढिल्लन

हे दिसम्बर माह!
जाते-जाते
कुछ इतना उपकार करदे,
दर्द जो दिये हैं
बीस ने
उन घावों को भर दे

याद किया जाएगा
तुम्हारा यह अहसान
युगों-युगों तक
जाते-जाते कोविड-19 के कलंक से
दुनिया को मुक्त कर दे।

फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया, गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222 मो. 7767943298

परंपराओं की आड़ में विवेक की तिलांजलि -डॉ. एल.सी. शर्मा

इतिहास कहता है कि मानव सभ्यता का विकास नदियों के किनारों तलहटियों तथा मैदानी क्षेत्रों से आरम्भ हुआ। युद्ध के भय, अन्वेषण की चाह तथा एकाकी जीवन जीने आदि कारणों से एक बड़ी जनसंख्या दूर दराज़ पहाड़ों की ओर जाकर बसने लगी। पहाड़ों के विस्तार तथा खुलेपन के होते हुए लोगों का बिखराव हुआ तथा कालान्तर में परिवार बड़े कुटुम्ब में तथा कुटुम्ब गाँव में परिवर्तित होने लगे। क्योंकि पहाड़ों में बिखरे रूप मे बसने वाले लोगों का मैदानी क्षेत्रों में अधिक सामूहिक रूप से रहने वाली जनसंख्या में संचार साधन न होने के कारण, दूर-दूर तक कोई नाता नहीं रहा, जो वैचारिक उन्नति समूहों में रहने वाले मैदानी क्षेत्रों में हुई, वह पहाड़ों तक न पहुँच पाई।

पहाड़ी कबीलों में शक्तिशाली व बलशाली रसूखदारों ने बहुत सारी मनगढ़ंत जीवनशैली को बढ़ावा दिया तथा कालान्तर में जो जीवन दर्शन से जुड़ी रचनाएँ भी मानव समाज को मिली, उनका भी सही से व्याख्यान न होने के कारण कई प्रकार की रूढ़ियों ने जन्म लिया जिनका मानव प्रगति से दूर-दूर तक कोई नाता नहीं। यही कारण है कि जैसे-जैसे हम दूर तक पहाड़ों की जीवन शैली देखते हैं, वैसे-वैसे तामसिक वृत्तियों का वर्चस्व अधिक दिखाई देने लगता है। जैसे कि काल्पनिक दैव्यों की पूजा, मंदिरों में लकड़ी व पत्थर की मूर्ति को देवता बनाना, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि चढ़ाना आदि-आदि ऐसे ही ढेर सारी रूढ़ियाँ शिक्षा से अछूत मैदानी क्षेत्र में पनपी जिन्हें अब शिक्षित समाज भी जूझ रहा है। यह हमारी शिक्षा का पंगु होना दर्शाता है कि हम डिग्रियाँ लेकर भी समाज की रूढ़ियों जो कि हमें पीछे धकेल रही हैं, पर विवेकपूर्वक चर्चा करने से कतराते हैं। जहाँ शिक्षा का मूल उद्देश्य मनुष्य की चिंतन शक्तियों को दीवारहीन बनाकर ब्रह्माण्ड के रहस्यों को खोजने के लिए अनुकूल बनाता है। वहीं हम परंपराओं तथा रूढ़ियों की कुछ ऐसी दीवारें बना बैठे हैं कि उन्हें दूर करना तो क्या, उन पर चर्चा करना भी अपराध समझते हैं। सदियों से चली आ रही इन रूढ़ियों पर समय-समय पर कई महान आत्माओं ने कुठाराघात करने के प्रयास भी किए लेकिन इनकी आधारशिला इतनी सशक्त है कि उनके सभी प्रयास बहुत तीव्रता से प्रभाव न छोड़ सके। लगभग 7000 वर्ष पूर्व श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद् गीता द्वारा इन समस्त रूढ़ियों का खण्डन किया परन्तु इनका सही भाव आज तक आम इन्सानों की पहुँच से दूर ही है। गीताज्ञान को आज भी लोग पाण्डवों-कौरवों के मध्य के शस्त्रयुद्ध के संदर्भ में देखते हैं जबकि गीता में कभी शस्त्रयुद्ध की बात नहीं की गई है। श्रीकृष्ण के बाद जीजस क्राइस्ट, गैलिलियो, सुकरात, दयानंद, विवेकानंद आदि महापुरुषों ने मनुष्य जाति को सत्य से आत्मसात करने का प्रयास किया, लेकिन सभी को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ी। ऐसे में सदी के महान चिंतक प्रोफेसर राम कुमार गुप्ता की टिप्पणी में किसी पाश्चात्य लेखक, वैचारक का उल्लेख याद आता है कि यदि आप कुछ अच्छा करने का प्रयास करते हैं तो इसकी कीमत अदा करने के लिए भी तैयार हो जाओ। प्रश्न यह है कि आख़िर हमने पिछले लगभग 10000 वर्षों से सीख क्या ली है? आख़िर क्यों हम उसी मार्ग पर अग्रसर हैं जिसका कोई सशक्त नेतृत्व नहीं है अपितु भटकाव ही भटकाव है? विडंबना तो यह है कि न केवल हम सत्य को अस्वीकार कर रहे हैं अपितु असत्य को पूरी शक्ति के साथ सत्य सिद्ध करने के प्रयास कर रहे हैं। इसका नवीनतम उदाहरण कुल्लु दशहरा तथा श्री रघुनाथ मंदिर से जुड़ी परंपरा का है। हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने किसी भी धार्मिक स्थान तथा उत्सव में बलि चढ़ाने की परंपरा को बंद करने के आदेश पारित किए। पहाड़ों में यह परंपरा बनी है कि देवताओं को प्रसन्न करने के लिए तथा अपने भौतिक सुखों की प्राप्ति के लिए बेजुबान मेमनों, भेड़-बकरियों की मंदिरों में बलि चढ़ती है। इस बेतुकी राक्षस परंपरा से तो यही समझ आता है कि हम राक्षसों, भूतों को प्रसन्न कर रहे हैं। ईश्वरीय शक्ति कभी किसी का अहित नहीं चाहती है। मनुष्य ने कभी स्वयं की बलि देने की तो नहीं सोची पर दूसरों असहायों की अवश्य ही। दूसरों असहायों की जगह यदि कभी शेरों की बलि देने की सोची भी होती तो आटा-चावल के भाव समझ में आता। उच्च न्यायालय के इस निर्णय के विरुद्ध कुछ व्यक्तियों ने कुल्लु दशहरे के संदर्भ में परंपराओं को ढाल बनाकर सर्वोच्च न्यायालय में अपनी दलीलें देकर हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के निर्णय को प्रभावहीन बना दिया। जिन रघुनाथ (श्रीराम) ने जीवन भर नैतिकता, सदाचार व

आदर्श स्थापित करने के लिए पीड़ा सहन की, उन्हीं की आड़ में आज बेजुबान मेमनों की बलि चढ़ाने की बात से याचिकाकर्ताओं को क्या लाभ मिलेगा, यह समझ से परे हैं। इसकी क्या हानि हो सकती है यह अवश्य एवं सहजता से समझ आता है । कहते हैं प्रसन्नता बांटने से कई गुणा अधिक प्रसन्नता मिलती है तथा कष्ट बांटने से कई गुणा अधिक कष्ट की प्राप्ति होती है। मेमनों के कटने से होने वाले कष्ट अपना प्रभाव कैसे छोड़ेंगें यह भविष्य के गर्भ में हैं। देवभूमि कहे जाने वाले हिमाचल प्रदेश में प्रत्येक वर्ष एक हज़ार से अधिक लोगों की जान भू-स्खलन तथा सड़क दुर्घटनाओं से होती है। यदि यह वास्तव में देवभूमि होती तो देवतागण इन आकस्मिक मृत्यु से रक्षा अवश्यक करते। क्योंकि हम अपने कर्मों से इसे दैत्य भूमि बनाने में लगे हैं तो इसका कोप होना अनिवार्य है। कर्मों की गति पर टीका करने वाले लोग इसे इन कुरीतियों के दुष्परिणाम के रूप में भी देखने लगे हैं। वनों को काट कर अपनी भूसंपत्ति का विस्तार कर हमने हिमालय में बैठी सभी दैविक शक्तियों को कुपित कर दिया है। अपने फलों, सब्जियों आदि के उत्पादन में हम प्रचुर मात्रा में प्राणघातक कीटनाशकों के प्रयोग से हमने प्रत्येक व्यक्ति के भीतर बैठे नारायण को कुपित करना आरंभ कर दिया है। आखिर इस कोप का परिणाम कहीं न कहीं तो होना ही है, क्योंकि इसके जिम्मेवार कोई और नहीं अपितु हम स्वयं ही है। प्रकृति की इस चेतावनी को यदि अभी भी नहीं सुना तो यह भयावह रूप ले सकती है। मनुष्य में विवेक आए, स्वार्थपरता तथा व्यैक्तिक अहंकार से ऊपर उठकर सर्वकल्याणार्थ सेवा करें। ऐसी सामाजिक सोच एवं विचार को परिपक्व करने की आवश्यकता है। नहीं भूलना होगा कि कण-कण में नारायण है।

-प्रधान संपादक 'द रीव टाइम्स',
शनान, (संजौली)
शमला, (हि.प्र.)
md@iirdshimla.org

रिश्तों को जोड़ती रस्म 'न्यूंद्रा'

-पवन चौहान

भारतीय समाज में ऐसी बहुत सी रस्में और रिवाज है जिन्हें देख-समझकर बड़े ही आराम से कहा जा सकता है कि ये रस्में, ये रिवाज हमारे बुजुर्गों की सैकड़ों वर्षों के अनुभवों की देन है। उन्होंने सब भला-बुरा देखकर इन्हें अपने समाज की बेहतरी के लिए संजोया है। आज इन्हीं की बदौलत हम अपने आप को एक-दूसरे के साथ जोड़े रखते हैं। ऐसी ही रस्मों में से एक है 'न्यूंद्रा'। न्यूंद्रा अर्थात निमंत्रण। हिमाचल के हर जिले में इसे अपने-अपने तरीके से निभाया जाता है। हिमाचल के बहुत से भागों की तरह जिला मंडी की मंडयाली बोली में इस निमंत्रण शब्द को 'न्यूंद्रा' कहा जाता है। इस रस्म का चलन तब हुआ जब हमें खास मौकों पर अपनो को आमंत्रित करने की आवश्यकता हुई। वर्तमान की भांति उस समय कोई निमंत्रण पत्र, व्हाट्सएप या ई-मेल सुविधा नहीं थी।

न्यूंद्रा यानी निमंत्रण देने के लिए सिंदूर का प्रयोग किया जाता है। सिंदूर शुभ का रंग माना जाता है इसलिए इस कार्य के लिए सिंदूर को मान्यता मिली है। न्यूंद्रा की रस्म सिर्फ शादी के लिए ही निभाई जाती है। जन्मदिन, गुंत्रयाला (नामकरण समारोह) प्रीतिभोज या उत्सव आदि के लिए नहीं। इस रस्म को घर के मुख्य द्वार की चौखट की ऊपरी क्षैतिज वाली लकड़ी पर सिंदूर का टीका लगाकर निभाया जाता है। द्वार पर टीका लगाने के पश्चात घर में जो पुरुष उस समय मौजूद होता है उसके माथे पर भी सिंदूर का टीका लगाया जाता है और पूरे परिवार को शादी का निमंत्रण दिया जाता है।

बता दें कि यदि न्यूंद्रा देने वाला उम्र में बड़ा हो तो उक्त परिवार का व्यक्ति उसके पाँव छुएगा और यदि न्यूंद्रा देने वाला उक्त परिवार वाले व्यक्ति से छोटा हो तो वह परिवार के उन बड़े-बुजुर्गों के पाँव छुएगा। यह संस्कार की पाठशाला का एक अभिन्न हिस्सा है। यदि घर में उस समय कोई पुरुष न हो तो महिला को यह सिंदूर का टीका नहीं लगाया जाता। सिर्फ घर के मुख्य दरवाजे पर ही टीका लगाकर महिला को शादी की तिथियाँ बताकर

परिवार को आने का निमंत्रण दिया जाता है।

यदि न्यूंद्रा देने आए व्यक्ति को घर में कोई भी न मिले तो वह मुख्य द्वार पर टीका लगाकर अपनी उपस्थिति दर्ज करता है। साथ ही आस-पड़ोस के किसी व्यक्ति से कहकर उक्त परिवार को वह निमंत्रण दे देता है। लेकिन इतना अवश्य है कि सूची में शामिल बुलाए जाने वाले रिश्तेदारों को न्यूंद्रा अवश्य दिया जाता है। न्यूंद्रा देने आए व्यक्ति का परिवार वाले खूब आतिथ्य करते हैं। यह इस रस्म की विशेष बात है।

जिनके घर में शादी होती है वैसे तो न्यूंद्रा उन्हीं को ही देना होता है, परंतु यदि घर में यहाँ-वहाँ दूर-दूर तक रिश्तेदारी में न्यूंद्रा देने जाने वाले सदस्य न हों तो शादी वाला परिवार अपने आस-पड़ोस के लड़कों या बड़ों को अलग-अलग इलाके से बुलाए जाने वाले अपने रिश्तेदारों की सूचियाँ थमाकर अपने इस न्यूंद्रा की रस्म को उनसे निभवाता है। ऐसा करके शादी वाले घर को शादी की तैयारी के लिए काफी समय भी मिल जाता है और न्यूंद्रा की रस्म भी पूरी हो जाती है।

बता दें कि न्यूंद्रा देने के लिए महिलाएँ नहीं जाती, यह कार्य पुरुषों के हवाले ही होता है। यह उस समय से प्रथा चली आ रही है जब रिश्तेदारी में दूर-दूर सुनसान इलाकों से होकर गुजरना पड़ता था। उस समय महिलाओं की सुरक्षा की दृष्टि से यह कार्य पुरुषों ने अपने ही जिम्मे रखा जो आज भी जारी है।

शादी की सारी तिथियाँ कुल पुरोहित द्वारा जब तय कर ली जाती हैं तो उसी समय न्यूंद्रे की शुरूआत के लिए शुभ दिवस और समय भी निश्चित कर लिया जाता है। न्यूंद्रे में एक विशेष बात यह है कि सबसे पहला न्यूंद्रा मिठाई के साथ दूल्हा-दुल्हन के ननिहाल को ही दिया जाता है। उसके बाद ही अन्य रिश्तेदारों के संग यह रस्म निभाई जाती है। यदि बहुत समय पहले की बात करें तो ननिहाल वालों को न्यूंद्रा देने पहले कुल पुरोहित स्वंय जाया करते थे।

आज समय जरूर बदला है। शादी, जन्मदिन, अन्य किसी उत्सव या त्योहार के लिए निमंत्रण पत्र, व्हाट्सएप पर या फिर मेल आदि पर भी भेजकर इतिश्री कर दी जाती है। नहीं तो फोन करके भी बुलावा दे दिया जाता है। इस शॉर्टकट तरीके को आज की युवा पीढ़ी अपना रही है। बावजूद इसके सुखद बात यह है कि वर्तमान के इस व्यस्ततम समय में न्यूंद्रा की यह रस्म पूर्व की तरह आज भी हिमाचल में निभाई जा रही है।

न्यूंद्रा किस तरह से लोगों को जोड़ता है इसका व्यवहारिक पक्ष यह है कि जब हम घर-घर बुलावा देने पहुँचते हैं तो हम अपने रिश्तेदार व उसके परिवार के साथ मिल पाते हैं। नई पीढ़ी जब न्यूंद्रा देने जाती है तो उन्हें अपने रिश्तेदारों की जान-पहचान भी हो जाती है और वे उस इलाके से भी वाकिफ हो जाते हैं जहाँ उन्हें भविष्य में यह जिम्मेदारी निभानी है। इस हल्के से मिलन के दौरान दो घड़ी उनके सम्मुख बैठकर व बातचीत करने से उनका हालचाल, दुःख-सुख भी जान लेते हैं। अपनी रिश्तेदारी से रूबरू होने, अपनों की पहचान कर पाने के लिए कुछ इस तरह से यह परंपरा पीढ़ी दर पीढ़ी आगे चलती जाती है। अपने समाज को बचा, रखने में ऐसी रस्में बहुत कारगर हैं। यदि गाहे-बगाहे अपनी रिश्तेदारी में किसी से अनबन हो गई हो तो यह न्यूंद्रा रस्म हमारी सारी नोक-झोंक को भुलाकर फिर से हमें अपनों के साथ मिला देती है।

इस इलेक्ट्रॉनिक युग में बेशक हमारी जीवन की रफ्तार बहुत तेज हो चुकी है। इंटरनेट ने पूरी दुनिया को बिल्कुल करीब ला दिया है। लेकिन दूसरी तरफ देखें तो हमें अपने करीबियों से दूर भी उतना ही कर दिया है। ऐसी स्थिति में न्यूंद्रा जैसी रस्में हमें अपनों के नजदीक लाने में बहुत सहायक सिद्ध होती हैं।

शर्त बस इतनी भर है कि हमें थोड़ा समय अपनों के लिए निकालना होता है। कई बार हम अपने किसी उत्सव आदि का निमंत्रण व्हाट्सएप, मेल या मोबाइल के जरिए देकर अपनी जिम्मेदारियों की इतिश्री तो कर लेते हैं लेकिन यह प्रक्रिया हमें अपनों तक सही मायने में पहुँचने ही नहीं देती। उस समय हमें न्यूंद्रा जैसी रस्म बहुत तसल्ली देती है। यह बुजुर्गों का पीढ़ी दर पीढ़ी नई पीढ़ी के लिए ऐसा प्यारा-सा उपहार ही नहीं बल्कि ऐसा खरा अनुभव भी है जो हमें अपनों से जोड़े रखने में बहुत मदद करता है।

गाँव व डाकघर- महादेव,
तहसील-सुन्दरनगर, जिला-मण्डी
हिमाचल प्रदेश- 175018
मो0- 098054 02242, 094185 82242
Email% chauhanpawan78@gmail-com

हिमाचल की हिन्दी कहानी और बद्री सिंह भाटिया - नेम चन्द ठाकुर

हिमाचल प्रदेश से सम्बंधित बद्री सिंह भाटिया लम्बे समय तक हिमाचल से निकलने वाले साप्ताहिक गिरिराज के सम्पादक रहे हैं और आज हिन्दी साहित्य में एक स्थाापित हस्ताक्षर हैं। उनकी साहित्यिक लगन ने समाज को देखने की अलग दृष्टि, मेहनत और शब्द शक्ति के बल पर अपनी कलम की रचनात्मकता का लोहा प्रदेश ही नहीं बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर मनवाया है। आज राज्य या राष्ट्रीय स्तर का ऐसा कोई पत्र या पत्रिका नहीं हैं जिसमें उनकी साहित्यिक रचना न छपी हो।

समाज एक ऐसी इकाई है जो भौगोलिक परिदृश्य के अनुसार आसपास के वातावरण के आधार पर लोगों के समूह द्वारा निर्मित होती रही है। प्रत्येक समाज में लोग अपनी दैनंदिन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एक दूसरे के सम्पर्क में रहते हैं। वे समाज द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार कार्यव्यवहार करते हैं। यह इसलिए अनिवार्य है क्योंकि एक स्वस्थ समाज का विकास तभी संभव है। साहित्य समाज की इस प्रक्रिया से गुजरता है और विभिन्न विधाओं के अंतर्गत इन प्रक्रियाओं को प्रतिबिंम्बित करता है। समाज में होने वाले घात-प्रतिघात, उनसे उत्पन्न होने वाले सम्बंधों तथा समस्याओं का विषद वर्णन हमें साहित्य की विधाओं के माध्यम से ही उपलब्ध होता है। कारण स्पष्ट है कि समाज का अर्थ सामाजिक अंत:क्रिया है। इसे और स्पष्ट कर दें कि जब तक भावों, विचारों का आदान प्रदान तथा सामाजिक अंत:क्रिया न हो तब तक समाज का अस्तित्व सम्भव नहीं। मानवता के जीवन दर्शन का चित्रण साहित्य सृष्टि का विषय है। यही कारण है कि आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने साहित्य को समाज का दर्पण कहा है।

मनुष्य प्राकृतिक व सामाजिक प्रक्रियाओं तथा घटनाओं के साथ अनेक प्रकार से जुड़ा हुआ होता है। वह उसके हितों और आवश्यकताओं को प्रभावित करता है। इसी वजह से वह इन प्रक्रियाओं और घटनाओं के प्रति एक निश्चित भावात्मक रुख अपना कर उनका हमेशा ही मूल्यांकन करता रहता है।

जीवन जगत के विभिन्न चिंतक अथवा साहित्यकार जिन सिद्धांतों को मान्यता देते हैं उनकी समष्टि उनकी आइडियोलोजी अथवा विचारधारा के अनुसार होती है। उसका दर्पण जो जिस तरह से देखता है उसका उसी तरह अपनी तार्किक क्षमता के अनुसार निरूपण करता है। यह उसकी चेतना और ग्राह्यता पर निर्भर करता है।

बद्री सिंह भाटिया हिमाचल प्रदेश के अस्तित्व में आने के बाद की दूसरी-तीसरी पीढ़ी के रचनाकारों में आते हैं। उनका जन्म हिमाचल प्रदेश के सोलन जिला के अर्की उपमण्डल के अन्तर्गत गाँव ग्याणा में 4 जुलाई, 1947 को हुआ। यद्यपि वे अपने शिक्षाकाल से ही रचनारत थे मगर 1981 में उनके कहानी संग्रह 'ठिठके हुए पल' के प्रकाशन से पाठकों और साहित्यकारों का ध्यान उनकी ओर गया। इससे पूर्व वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं, आकाशवाणी और सामान्य साहित्य गोष्ठियों से भी अपनी पहचान बना चुके थे। बद्री सिंह भाटिया किसी विशेष विचारधारा का पोषण नहीं करते। उनकी रचनाओं में समाज के आमजन की अवस्थितियों और समस्याओं का गुंफन हुआ है। इनमें भी उन्होंने ग्रामीण जनों की भावनाओं को उजागर किया है। उन्होंने अपनी रचनाओं में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक अवस्थितियों को स्वर दिया है। उनकी रचनाओं में नारी विमर्श, दलित विमर्श, कृषक चिन्तन से लेकर औद्योगिकीरण और मिडिया के माध्यम से हो रहे सांस्कृतिक परिवर्तन की चिन्ता साफ दिखाई देती है। अपने उम्र के इस पड़ाव में भी वह अत्यंत ऊर्जस्विता और सजगता से साहित्य के प्रति समर्पित हैं। उनकी दस कहानियाँ राज्य और राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में जगह हासिल करने में कामयाब रहीं जिसे पाठकों ने हाथों हाथ लिया। इनमें पाज्जे के फूल, गोरखू चाचा, दोष मुक्त, विषधर, जिनका कोई नहीं होता, कहाँ है मेरा घर, छल्ले में जिंदगी, माटी की कसम, एक बार फिर और फिर किसी और जगह। ये कहानियाँ पाखी, प्राची, समहुत, कथाक्रम, लमही, जनपथ, मधुमती आदि प्रतिष्ठित पत्रिकाओं और दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित हुई हैं। आज उनके खाते में चौदह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास और एक कविता संग्रह हैं। उपरोक्त के अतिरिक्त बद्री सिंह भाटिया एक अच्छे अनुवादक भी हैं। उन्होंने

क्रिस्टोफर मार्लो के नाटक 'डॉक्टर फॉस्टस' और रूपर्ट ब्रुक के नाटक 'लिथवानिया' का हिन्दी अनुवाद भी किया है। बद्री सिंह भाटिया ने अनेक नाटकों की रचना भी की है जिनमें कठोपनिषद पर आधारित एक नाटक 'आत्म तत्व की खोज' और महाभारत के एक प्रतिष्ठित पात्र पर आधारित नाटक 'एकलव्य' का अनेक जगह मंचन हुआ है जो दर्शकों के बीच अपनी उपस्थिति दर्ज करवाने में पूर्ण सफल रहा है।

उनकी आरम्भिक रचनाओं में जो उठान था वह आज एक प्रौढ़ और अनुभवों की सांद्रता में और अधिक पुष्ट और पल्लवित हुआ है। 'ठिठके हुए पल' की शीर्षक कहानी में वे समाज में वृद्धों और शहर से गाँव आए बेटों, बहुओं की अवस्थिति को प्रकट करते हैं। गाँव का एक चलन है। वहाँ खेत हैं, खलिहान हैं। रोजमर्रा के जीवन में पालतु पशुओं के लिए घास-पात लाते लोग हैं और वृद्धों के साथ छेड़खानी करते बच्चे हैं। समय देखने का यंत्र घड़ी उन्हें किसी काम से नहीं रोकता। स्वत: ही सारे काम होते रहते हैं। मगर बूढ़े पिता को लगता है कि अब सभी लोग हाथ में घड़ी बांधने लगे हैं। उसकी चाह भी है और बेटा उसकी इस चाह को पूरा कर देता है। तभी बच्चे उसे छेड़ने लगते हैं उससे यूँ ही समय पूछने लगते हैं- ''दादू क्या बजा है?'' वे जानते हैं कि बूढ़े दादा की नज़र घड़ी के बारीक अंकों को पढ़ने में सक्षम नहीं है। सम्बंधों की इसी कड़ी में 'आवाज़' संग्रह की कहानी 'घाट वालों की बहू' को भी देखा जा सकता है। यहाँ बिना माँ-बाप का बच्चा अपने दादा के साथ सोते कई बार पूछता है कि 'उसकी माँ कैसी थी?' यह प्रश्न बहुत ही मार्मिक है। दादा अपने खोए बेटे और घर की रौनक बहू के न होने से उसे बता पाने में असमर्थ है, बताता है तो बस इतना कि वह घाट वालों की बहू की तरह थी। बच्चा अपने दिमाग में एक छवि बनाता है और उस बहू में अपनी माँ देखने लगता है। इसी संग्रह की कहानी 'नया हलबाह' में बच्चा अपनी विधवा माँ के सहारे की कड़ी बनता है। वह माँ के कहने पर खेतों में हल की मूठ पकड़ता दिखता है। हालांकि हल की मूठ पर दबाव माँ का है मगर लोगों को तो दिखाना है। इस समाज में औरतों का हल चलाना ठीक नहीं समझा जाता।

'ठिठके हुए पल' संग्रह की एक और कहानी 'भायथू' में वह तत्समय की स्थितियों को उजागर करता है। गडरिये उस समय अपने रेवड़ों के साथ गाँव-गाँव आया करते थे। भेड़-बकरियाँ चराने के लिए उन्हें पुहाल कहा जात था। पुहाल बालक गाँव के बच्चों को स्कूल जाते देखता है तो मन में ललक जागती है कि उसे भी स्कूल में जाकर पढ़ना चाहिए। इसी क्रम में 'धूप की ओर' कहानी संग्रह से 'बैल बनी बेटियाँ' कहानी में समय की माँग को लक्ष्य बनाया गया है। घर में बैल नहीं है। इधर फसल लगाने का समय हो गया है। बैल खरीदने के लिए माकूल धन की भी कमी है। तभी बड़ी बेटी के मन में आता है कि इस समस्या के निदान के लिए यह किया जा सकता है कि वे दोनों बहने 'जुआ' (जुंगड़ा) खींचे और हल की मूठ (आड़ी) पर पिता हो। फिर बारी-बारी सभी जुआ खींच कर फसल लगा सकेंगे।

बद्री सिंह भाटिया ने समाज के विभिन्न पहलुओं को समेटने की कोशिश की है। मानवीय सम्बंधों पर भी उन्होंने खूब कलम चलाई है। वे सम्बंध माता-पिता के हों, भाई-बहन के और पति-पत्नी के हों अथवा सामान्य प्रेम और प्रेम की परिणति के। दाम्पत्य सम्बंधों में उनकी 'यातना शिविर' संग्रह में संकलित 'सालगिरह' कहानी में पति-पत्नी के भीतर की खटक को देखते हुए सालगिरह पर पति का देर से घर लौटना और पत्नी का प्रतीक्षारत रहने के ताने-बाने में रात की बहुत सी अवस्थितियों को उजागर किया गया है। वह अपने दोस्त के घर शराब पीकर लौटता है तो इतना नशे में होता है कि गाड़ी चलाना मुश्किल हो जाता है। वह सील्ड रोड पर से गाड़ी चलाता घर पहुँचता है तो घर में अलसाई दरवाजा खोलती बिना किसी प्रतिवाद के पीछे हटती पत्नी को देख चौंकता है कि वह कहीं गलत घर में तो नहीं आ गया। वह तभी कैलेंण्डर में उस दिन के गिर्द लगाए लाल निशान को देख मन ही मन चौंकता है और बुदबुदाता है कि आज तो उनकी शादी की सालगिरह थी। पत्नी इस दिन को मार्क कर रखती है और सुबह अनबोले भी आग्रह करती है कि वह शाम को जल्दी घर आए। दाम्पत्य संबंधों में ठिठके हुए पल की कहानी 'नंगा वृक्ष' को देखें तो यहाँ आपातकाल के समय की समस्या को उजागर किया गया है जहाँ पति की जबरन नसबंदी कर दी जाती है और वह नपुंसक हो जाता है। युवा पत्नी उसे दुत्कारती है और वह घर में गाँव के अन्य लोगों को उसके साथ हँसी ठिठोली करते देखता है तो उसका दिमाग भिन्ना जाता है। वह उस समय की प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी की सभा में नग्न हो जाता है और सवाल करता है। 'उसका रोना' कहानी एक और पहलू को दर्शाती है। विवाह के समय दुल्हनें बदल गई थीं। परिवार एक था तो इसे मान्यता देने के लिए कहा गया। परन्तु एक पत्नी ने पति को उस रूप में नहीं स्वीकारा और वे बिना किसी प्रक्रिया के उसी घर में अलग-अलग रहने लगे। पत्नी के देवर के साथ सम्बंध हो गए और बच्चे भी। यह सामान्य बात हो सकती है

मगर जब पति दूसरे गाँव वाली जमीन में रहने लगा और एक उम्र तक पहुँच अचानक मृत्यु को प्राप्त हो गया तब स्थिति भिन्न हो गई। उसकी लाश घर में सड़ती रही और जब पता चला तो वह लाश उठाते समय अचानक दहाड़ मार कर रोनी लगी, 'ओ मेरेआ मालका'। उसका इस प्रकार का प्रलाप लोक दिखावा बन जाता है और उनके दाम्पत्य सम्बंधों के जानकार लोगों के लिए हास्यस्पद भी बनता है।

बद्री सिंह भाटिया की एक और कहानी है 'और वह गीत हो गई'। इस कहानी में दुहाजू पति का इलाके की रीत प्रथा के अनुसार विवाह होना तय हुआ। होने वाली पत्नी भी दुहाजू ही थी। होने वाला पति सरकारी नौकरी करता था और आवागमन के साधन न के बराबर थे। वह समय पर घर नहीं पहुँच पाया। इधर लोग रिवाज के अनुसार दुल्हन को घर ले आए। रात को खूब गिद्दा पड़ा। वह नाची भी मगर जब शाम तक वह नहीं आया तो दूसरे दिन संध्या तक प्रतीक्षा कर वहाँ से चली गई। घटना यह कि अभी वह गाँव की सीमा भी नहीं लांघी थी कि पति आ गया। लोग दौड़ाए गए मगर नहीं, वह कहीं और चली गई थी। इस पर एक लोग गायक ने गीत बना दिया जो लम्बे समय तक गाया जाता रहा।

रिश्तों के इसी क्रम में भाई बहन के प्यार को दर्शाती मार्मिक कहानी है 'पाज्जे के फूल'। इसी शीर्षक से उनका संग्रह भी आया है। यहाँ बहन भाई बहुत अमीर नहीं हैं। बहन की शादी एक ऐसे परिवार में हुई है जिनके पास अधिक जमीन नहीं है। वह विधवा भी हो गई है। परिणामत: विपन्न जीवनयापन करती है। वह रक्षाबंधन के त्योहार पर भाई के घर जाती है। जब लौटने लगती है तो भाई को प्रकृति के इशारे से कहती है कि तू भी उसके घर आना, लेकिन तब आना जब 'पाज्जे' फूले हों। पाज्जे के फूलने का समय नई फसल के आने का द्योतक होता है, लेकिन भाई बहन का इशारा भूल गया और विडम्बना देखिए कि भाई जब उसके घर जाता है तो मौसम दूसरा होता है। आदर स्वरूप वह क्या पकाए? यहाँ बहुत ही मार्मिक चित्रण पेश किया गया है । 'बची हुई आदमीयत' कहानी में पिता की दयनीय स्थिति को दर्शाया गया है। बेटी बलात्कार के बाद मार दी जाती है। दूरदराज गाँव में पोस्टमार्टम की व्यवस्था नहीं है। पिता को पुलिस चौदह किलोमीटर दूर पोस्टमार्टम कराने का आदेश देती है। गाँव में कोई उसकी मदद नहीं करता और विपन्न वह अपनी बेटी की लाश को साइकिल पर बाँध कर बतियाता उसे अस्पताल ले जाता है। रास्ते में उसे एक युवा मिलता है जो कुछ समय तक उसका साथ देता लाश को ढोता है। शहर के बाहर एक पत्रकार मिलता है जो सारी स्थिति का जायजा लेकर उसकी मदद कर पोस्टमार्टम करवाने में सफल होता है। यह कहानी हमारे यहाँ के पहाड़ी समाज की नहीं लगती मगर जब हम अन्य राज्यों के दूरदराज के क्षेत्रों की खबरें अखबारों में पढ़ते हैं टेलीविजन में देखते हैं तो लगता है कि कहानी अपने रचनात्मक यथार्थ को पूर्ण करती है और आदमी की मानसिकता को प्रकट करती है। इस कहानी के माध्यम से लेखक अपने को आँचलिक लेखक की परिधि से बाहर निकलने में पूर्ण सफल रहा है। 'धूप की ओर' संग्रह की एक और कहानी 'उल्टे रास्ते में' एक चाचा के माध्यम से उसकी भतीजी के साथ पति द्वारा किया पशुवत बर्ताव को स्वर दिया गया है। 'बड़ियाँ डालती औरतें और शुभांगी कथा' कहानी इसी शीर्षक से आए संग्रह की लम्बी कहानी है। कहानी में उन औरतों को एक युवती दिखती है। मेहमान आई नातिन पूछती है और फिर अमुक शुभांगी के दाम्पत्य सम्बंधों के बिखराव की एक लम्बी कहानी सुनाई जाती है।

बद्री सिंह भाटिया मूलत: ग्रामीण कथाकार हैं। उनकी कहानियों में अधिकांश ग्रामीण परिवेश को परिलक्षित किया जा सकता है। इधर हाल ही में औद्योगिकीकरण विशेषकर सीमेंट उद्योग से जो प्रभाव ग्रामांचल पर पड़ा है उन्होंने उसे महसूस कर कलमबद्ध करने की कोशिश की है। यह एक सजग रचनाकार का दायित्व भी है कि वह समाज की दैनंदिन घटनाओं को महसूस कर पाठकों से रूबरू करवाता रहे। 'लक्कड़बग्घा' उनका एक महत्वपूर्ण कहानी है। इलाके में सीमेंट उद्योग की स्थापना हो गई है। लोग प्रसन्न हैं कि उनकी जमीन का अधिग्रहण हो रहा है वे मिले पैसे से अपना जीवनस्तर ऊँचा करने की सोच रहे हैं। मगर इसी के दृष्टिगत गाँव की बुढ़िया अपने बेटे को बताती है कि आज तो जो जमीन अधिगृहित हो रही है वह केवल घासनी है। वहाँ फसल नहीं होती मगर वहाँ जो घास होता है वह तो उनके पालतू पशुओं के काम आता है। कल तुम्हारे बच्चे दूध की माँग करेंगे। खेत फसल लगाने के लिए हरी खाद की माँग करेंगे। कहाँ से लाओगे? इसी प्रश्न के तहत उसे लगता है कि सीमेंट कम्पनी विकास का पर्याय हो सकती है मगर वह तो उसके लिए एक बाघिन की तरह है। लक्कड़बग्घे की मानिंद है। औद्योगिकीकरण के तहत जब भूमि का अधिग्रहण होता है तो पता चलता है कि जो परिवार जिस भूमि को काश्त कर रहा होता है उसमें तो बहुत से लोगों की हकदारी है। इनमें

परिवारों के विघटन के साथ बहनें भी आती हैं। दिवंगत बहनों के बच्चे भी हकदार होते हैं। यहाँ तक कि मुतबन्ने भी। सभी अपना हक लेते हैं और जब बैंक के ऋण अदा न होने का नोटिस या कोई पत्र गाँव में आता है तो कोई नहीं जानता कि अमुक उस गाँव का वासी भी है या नहीं। वे कभी अमुक गाँव में रहे ही नहीं। पता गलत लिखा मान लौटा दिया जाता है। यह सब 'गलत पते की चिट्ठी' में अभिव्यक्त हुआ है। इसी क्रम में बद्री सिंह भाटिया ने पटवार शास्त्र को भी अपनी रचनाओं का वर्णय विषय बनाया है। पटवारी जो न करें सो कम। 'पीतल का फुट्टा' में पटवारी किस तरह जमीन के नक्शे देता है और किस तरह जमाबंदी की नकल देता है बखूबी प्रकट हुआ है। पटवार शास्त्र यानी जो पटवारी कर सकता है वह कोई नहीं कर सकता, से जुड़ी एक और कहानी 'मिठाई' में पटवारी के दिए निशान और कचहरी में रिश्वत की प्रक्रिया को भी दर्शाया गया है।

बद्री सिंह भाटिया ने स्त्री मन को लेकर भी अनेक कहानियाँ लिखी हैं। उनकी 'और वह गीत हो गई' संग्रह की सभी कहानियाँ स्त्रीमन की कहानियाँ है। उन्होंने समाज में स्त्री की विभिन्न स्तरों पर भागीदारी और अवस्थिति को प्रकट किया है। 'और वह गीत हो गई' में यदि एक दिन की दुल्हन होने की बात है तो 'लौटा दो मेरा मान में' एक ऐसी महिला की कहानी है जिसे स्कूल की बच्चियों को देह व्यपार में धकेलने के षड़यंत्र के तहत फंसाया गया था। जब वह बाइज्जत बरी हो जाती है तो वह प्रश्न करती है कि क्या उसका वह खोया हुआ मान वापस आ जाएगा। 'हूक' कहानी में एक लड़की अपने प्रेमी को पाने के लिए एक षड़यंत्र का शिकार होती है और जब वह एक लम्बे अंतराल के बाद मिलता है तो अंत:पीड़ा से तड़प उठती है। 'मिस काल' में एक पत्नी को पति के साथ बराबरी में चिराई करते पाया जाता है। इसी क्रम में दोषमुक्त, एक औरत की मनोइच्छा, खाली, प्रेतात्मा की गवाही, सुबह होनेवाली है, आँखें, शायद आदि कहानियाँ औरत के विभिन्न स्तरों पर कार्यव्यवहार और अवस्थितियों को प्रकट करती है।

उन्होंने अपनी कतिपय कहानियों में दलित स्थितियों को भी बखूबी उभारा है। उनका मानना है कि प्राय: सभी की पारिवारिक और सामाजिक स्थितियाँ कमोबेश एक सी ही है। कहीं कुछ जगह पर दलितों की समस्याएँ आम आदमी से भिन्न हैं। जैसे मंदिरों में प्रवेश, सामूहिक भोजों में उन्हें अलग बैठाना आदि। आज समय बदल गया है। अब ये समस्याएँ बहुत कम रह गई हैं। किन्तु इसका तात्पर्य कतई यह नहीं कि कि दलित समस्याएँ हैं ही नहीं। अभी भी इस क्षेत्र में बहुत कुछ किया जाना शेष है । डी.एन.ए, आवाज, उसका सपना, छलांग आदि कहानियों में दलित समस्याओं को बाखूबी उभारा गया है।

भाटिया ने कुछ कहानियाँ प्रचलित कथा शैलियों से हटकर अन्य शैलियों यथा बेताल कथाओं की शैली में भी लिखी है। आज का बेताल विक्रमार्क के बेताल की तरह पेड़ पर नहीं रहता। वह कहीं भी विचरण कर कथा सुनाता रहता हैं। आज का विक्रमार्क भी लगभग भिन्न है। वह पेड़ के पास नहीं जाता बल्कि बेताल उसके पास आता है। वह उसके चौबारे पर आकर कथा सुनाता है या वह कहीं बाजार में मिल जाता है। विक्रमार्क अपने राज्य की विभिन्न स्थितियों से परिचित होता है। इस शैली को अपनाने का उद्देश्य संभवता उन कथानकों को उजागर करना है जो प्राय: आम कथातत्वों के माध्यम से अभिव्यक्ति को प्राप्त नहीं होते। लोग सच कहाँ बोलते हैं, कर्मजली, शुचिता के सवाल, आदि कहानियाँ इसी शैली की कहानियाँ है।

बद्री सिंह भाटिया ने प्रेत संवाद, चुड़ैल बावड़ी और प्रेतात्मा की गवाही कहानियों में फेंटेसी को भी जगह दी है। प्रेत संवाद में वे जातियों के दंश में सवर्णों के भीतर भी छोटे बड़े की समस्या को देखते हैं। उनके श्मशान भी विभाजित हैं और यदि एक सवर्ण दूसरे बड़े सवर्ण के श्मशान पर लाश जलाने को ले जाता है तो उस पर विवाद हो जाता है। यहाँ प्रेत बनी स्त्री प्रेतात्मा को जाग्रत करने वाले दलित को अपनी व्यथाकथा सुनाती है। इसी प्रकार 'चुड़ैल बावड़ी' और 'प्रेतात्मा' की गवाही भी पठनीय कहानियाँ है।

बद्री सिंह भाटिया की गोरखू चाचा, खारिश, भंवर, छल्ले में जिंदगी, कहाँ है मेरा घर, आदि कहानियाँ बुढ़ापे की विभिन अवस्थितियों को प्रकट करती कहानियाँ हैं।

शिक्षा - क अनुभाग, कमरा न. 402 (ए)
आर्मज़डेल बिल्डिंग, हिमाचल प्रदेश सचिवालय
शिमला-171002
मोबाईल न0 94180 33783
nemcandroli@gmail.com

चिड़ियाघर –श्रीमती सुदर्शन पटयाल

वह मुझे करीब दस-बारह साल के बाद मिली थी। हम सानफ्रांसिसको घूमने निकले थे। प्रशान्त महासागर के तट पर बसे हरे-भरे पर्वतों, रंग-बिरंगे फूलों से निखरे इस महानगर को 'गोल्डन गेट ब्रिज' का मुकुट पहना कर शिरोमणी बना दिया है। प्रकृति और मनुष्य दोनों ने ही इसका शृंगार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी है।

वहाँ के भव्य गुरुद्वारे के दर्शन करने जब मैं अपने अन्य सम्बंधियों के साथ माथा टेक कर हॉल में शब्द-कीर्तन सुनने बैठी थी और ठीक सामने दीवार पर टंगी बड़ी-बड़ी तस्वीरों को देख-देखकर चकित हो रही थी कि तब अचानक वह मुझे झिंझोड़कर बोली,

''मैम! तुसी ओ ही मैम हो न.....ओ हो....की ना... सी तुहाडा....? हाँ...हाँ, सरला मैम, है ना??'' वह अपनी स्मृति पर जोर डालती बोल रही थी।

''....हाँ! मैं हूँ तो वही.....पर मैंने तुम्हें.....'' मैं कुछ हैरान-सी थी कि यह लड़की कौन हो सकती है कि वह मेरी बात को बीच ही में लपक कर बोल उठी,

''क्या तुम्हें याद है मेरी वह निशानी, वह डायरी? हाँ मैम याद आई? हाँ मैम....नाउ आइ एम ए ग्रोनअप गर्ल। अब मेरी मैरेज भी होने वाली है। वह सामने....वह लाल पगड़ी वाला मेरा फियांसी है। आज मेरी कुड़माई (सगाई) का लंगर मेरे माँ-पे और सोहरेयों (ससुरालियों) ने इकट्ठा दिया है।''

साथ बैठी औरतें हमें घूरने लगी थीं, मैं मुँह पर अंगली रखकर उसे चुप रहने का संकेत करने लगी तो वह भाग खड़ी हुई।

पाठ का भोग पड़ने पर सभी लोग लंगर हॉल की ओर चल पड़े। भीड़ देखकर यह लगता था मानो वह वह मिनी पंजाब है। वह लंगर बरता रही थी। मुझे आता देखकर वह काम छोड़कर आई और मेरी बाँह पकड़कर अपनी माँ के पास ले गई, ''बीबी! मेरे पुराणे मैम आए हैं। याद है तैनूं?'' ''हाँ...हाँ, क्यों नहीं? बड़े ही दिनां बाद गेड़ा लाया तुसीं। साडे धन्न भाग जे तुसीं आये। बैठो! लंगर छको। बड़ी मुश्किल नाल एह व्याह वास्ते तैयार होई है।'' वह मुझे पंगत में बैठाकर एक प्लेट में खूब सारा खाना डालकर मेरे सामने रख गयी। दूसरी बार आई तो बहुत-से फल और मिठाई रख गई।

''मैम! तुसी हौले-हौले खाओ, मैं काम निपटाकर अभी आई।'' कह कर वह फिर चली गई।

स्मृति के झरोखे से झाँक कर देखा तो ग्यारह-बारह साल की अल्हड़ ठेठ पंजाबी पिंड की जट्टी एकाएक जीवन्त हो उठी। मुझे उन दिनों रिसर्च के लिए कुछ स्कूलों में जाना होता था। वहीं किसी प्रिंसिपल ने सुझाया कि उन्हें कुछ भारतीय विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए भारतीय टीचर की आवश्यकता है। इस प्रकार मैं कुछ स्कूलों के साथ अध्यापक के रूप में जुड़ गई। इनमें से एक स्कूल में केवल यही एक भारतीय लड़की थी, पर उसे पढ़ाना दस विद्यार्थियों के पढ़ाने के बराबर था। जितना उसे पढ़ाने का प्रयत्न करती, वह एक न एक कहानी छेड़ देती। डाँट तो वहाँ सकते ही नहीं।

''....मैम जी देखो! हमारे गाँव के स्कूल में कितनी मौज थी। कभी गए, कभी नहीं गए। नतीजा निकलना होता तो हम भैंजियों (अध्यापिकाओं) को बार-बार नमस्ते कहते। घर से लस्सी, सब्जियाँ, दूध फल तो लाते ही रहते थे।'' कभी वो कहती,

''ये जो गोरी-चिट्टी मैंमें हैं न, इन से क्या पढ़ना। इनकी तो गिटपिट ही समझ में नहीं आती।''

एक दिन बोली, ''मैम! यहाँ खाने-पीने की मौज है। बैल बजते ही सब मैस की कैंटीन की तरफ भागेंगे। माइक्रोवेव का गरम खाना, मुझे तो फ्री मिलता है, कहूँगी मैम के पास पैसे नहीं हैं। आपको भी लेकर जाऊँगी।''

''नहीं..नहीं जीत। ऐसा मत करना, मैं घर से खाकर आती हूँ। पैसे भी हैं मेरे पास।''

''....तो निकालो एक डालर। अच्छा चलो, मैं लेकर आती हूँ। शेयर कर लेना।''

खाना खाते हुए वह बोली, ''मैम! ये हमें गरीब समझते हैं, तभी तो खाना मुफ़्त देते हैं।''

''नहीं जीत! यह कंट्री बहुत अमीर है। यहाँ के लोग बाहर से आए लोगों की मदद करते हैं ताकि वे अपने पैरों पर खड़े होकर कमायें। किसी पर बोझ न बनें। अपने माँ-बाप पर भी नहीं।''

यह गनीमत थी कि जो कुछ उसे मैं हिन्दी-अंग्रेजी में समझाती वह ग्रहण कर लेती थी। साथ ही होमवर्क भी करके लाती थी। एक दिन उसकी माँ किसी काम से स्कूल

आ गई। मुझे माँ से मिलाने ले गई वह। वह सहज देहाती ढंग से गले मिली, ''भैंजी (बहन जी) इसदा ध्यान रखना। हुन कुछ पढ़ाई विच मन लगदा है नईं तां कैंदी सी मैं नीं पढ़ना। पर कुझ पढ़ेगी तां ही कुझ बनेगी।'' फिर कुछ रुक कर उसने बताया, ''बहन जी! हम तो बर्बाद हो गये। गाँव की जमीन-जायदाद बेच आये। यहाँ कमाई का कोई वसीला नहीं है। अभी किसी और की रोटियाँ कितने दिन खायेंगे? उसके साँवले चेहरे पर बड़ी-बड़ी आँखें नम हो गईं, जिन्हें सफ़ेद दुपट्टे से पोंछती हुई वह बोलते चली गई, ''असी तां उस मक्खी दी तरां हां गये जो शहद चक्खन दी लालच विच पै जांदी है, कदी नां निकलन वास्ते। तड़फदी रंहदी है आखिर तक।''

''पता है माँ क्यों रोती है?'' उसने बाद में मुझे बताया, ''यह जो बुआ है न हमारी, उसने हमारे बापू को न जाने क्या पट्टी पढ़ाई कि वह सब कुछ बेचकर आ गया। सब ने मना किया था, जब बापू ने जमीन बेची थी दादी तो हमारे साथ बोली तक नहीं। वो कहती थी, 'रहन रख दे, पैसे भेज देना, हम छुड़ा लेंगे।'' वह थोड़ा रुकी साँस लेने के लिए, ''यह जो फुफड़ है न हमारा! यह एक गोरी मेम के चक्कर में है। हमारी बुआ ने बापू को बहुत लालच दिया था, कि यहाँ पैसा ही पैसा है। मेरी माँ को हमेशा गालियाँ देती है, चाहे वह दिन-रात काम क्यों न करती रहे। यहाँ की मशीने चलानी एक दिन में थोड़े न आती हैं।''

एक दिन वह कहने लगी, ''मैम आपको अपने देश के स्कूलों पर तरस नहीं आता? न बैठने को कमरे हैं, अगर कमरे हैं तो छत नहीं हैं। आँधी आये तो टीन भी उड़ जाये। आम के पेड़ों के नीचे क्लास, बारिश आये तो छुट्टी और इधर यहाँ के स्कूल देखो तो जैसे फिल्मों में दिखाए गये बड़े-बड़े महल हों।''

''जीत! तू पढ़ेगी भी कि मार खाएगी मेरे से? हर दम बातें ही करती रहती है।''

''आप मार ही नहीं सकते मेरे को।'' फिर बोली, हमारे पड़ोस में एक लड़का था, ''नाम था जसिया। मुझ से एक क्लास आगे था। एक बार मुझे एक पागल कुत्ते ने काट ही लेना था, अगर उसने बड़े-बड़े पत्थर न मारे होते उसको। वो कहता था, 'मेरा ताऊ कहता है, जो सात समुन्दर पार जाता है, वह सुन्हरे पिंजरे में बंद हो जाता है वापस नहीं आता। तू मत जा वहाँ।'

मैंने कहा, 'मैं तो जाऊँगी। हवाई जहाज़ में बैठकर आसमान में उड़ने में कितना मज़ा आएगा।''

'पर मेरी पतंग तो तेरे जहाज़ से भी ऊपर उड़ेगी।' सच्ची! वह बड़ी अच्छी पतंग उड़ाता था। वहाँ मेरा नाना कहता था, अच्छे घर का लड़का है। तेरी शादी कर देंगे इसके साथ।'' फिर कुछ रुककर याद करते हुए थोड़ा शरमाकर बोली, ''मुझे बड़ी याद आती है उसकी। वह तो यहाँ आ भी नहीं सकता।'' फिर थोड़ा ठहरकर बोली, ''क्या ब्याह करना जरूरी होता है मैम?''

एक दिन जीत कहने लगी, ''मैम! आपने छतबीड़ चिड़ियाघर देखा है? हम वहाँ स्कूल से पिकनिक मनाने जाते थे।'' फिर ठण्डा साँस लेते हुए बोली, ''मैम क्या आपको नहीं लगता कि हम यहाँ चिड़ियाघर के जानवरों की तरह पिंजरों में बंद हैं? सभी यहाँ पर हमारी तरफ़ कैसी-कैसी नज़रों से देखते हैं।''

''हाँ जीत! जीवन ही एक चिड़ियाघर है। हम सभी जीव-जंतु उस में कैद मुक्ति के लिए छटपटाते हुए अपने कर्मों से अनजान, फल भोगते हुए।''

''क्या कहा मैम आपने? कुछ समझ में नहीं आया।''

''तू अभी नहीं समझेगी जीत! अच्छा चल, पहाड़ा याद कर और लिख कर दिखा।''

मेरे विदेश प्रवास का समय समाप्त हो रहा था। कभी-कभी उसे सुना भी देती थी, पर वह अनसुना कर देती थी। एक दिन वह बोली, ''जब आप मेरे से नाराज होते हो तभी ऐसा कहते हो। अच्छा अब मैं बातें नहीं करूँगी, बस पढ़ूँगी।'' फिर एक दिन बोली, ''मैम! क्या सचमुच आपने चले जाना है? रुक नहीं सकते??''

''नहीं जीत! मेरी फैमिली उधर है। घर है, नौकरी है।''

''आप कितने लकी हो मैम। अच्छा मेरा एक काम करोगे वहाँ जाकर?''

''हाँ बोल! जरूरी करूँगी।''

''मेरी नानी को सनेहा देना है। पर आपको मेरे पिंड का पता कैसे चलेगा? अच्छा मैं बताती हूँ। आप बस में जाओगे या ट्रेन में?''

''बस में ही जाऊँगी?''

''उधर तो आप सज्जे हाथ वाली सीट पर ही बैठना। अम्बाले से काफी आगे निकल कर जब आम के पेड़ों के झुरमुट दिखाई देने बंद हो जाएँ और सफेदे के पेड़ दिखने लगें तो सज्जे हत्थ सड़क के किनारे एक मजार दिखाई देगी। उस पर हरी चादर चढ़ी होगी। उसी के पास एक पीपल के पेड़ का थड़ा होगा जहाँ लोग बैठकर ताश खेल रहे होंगे। पास ही एक खूह होगा। जीरकपुर से पहले और डेरा

बस्सी के बीच में वह जगह है। यहीं आपने उतर जाना है। यहीं से एक पगडंडी दिखाई देगी। हरे-हरे खेतों के बीच से। उसी पर चलते जाना है। फिर खब्बे हाथ हो जाना। कोई एक मील चलकर आपको बौड़ी दिखाई देगी। वहाँ बहुत-सी तीमियाँ कपड़े धो रही होंगी, जोर-जोर से थापी मार-मार कर। वहीं कहीं आस-पास बच्चे भी खेल रहे होंगे। उनमें ही पीली पगड़ी पहने जसिया भी होगा पतंग उड़ाता हुआ।

कोयल गा रही होगी, पंछी नाच रहे होंगे। आपको देखकर औरतें कानाफूसी करेंगी 'कि डाक्टरनी आई है।' फिर हँसी-मजाक करेंगी आपस में। आप बुरा नहीं मानना। उनमें एक गोरी-लम्बी सी जनानी होगी। वही होगी मेरी छोटी मामी। आप कहना मैं अमरीका से आई हूँ। अमनजीत का सनेहा लाई हूँ। वह जल्दी से पानी में हाथ धोकर कमीज से पोंछ चुन्नी सिर पर धर कहेगी, ''आप मेरे साथ घर चलो।'' रास्ते में औरतें गोहा थाप रही होंगी। आप ध्यान से चलना, तिलकन होती है। बहुत लोग रास्ते में अपने बैल और भैंसें बाँध देते हैं। आप डरना नहीं। वह मारते नहीं हैं, बस मक्खियाँ उड़ाते हैं पूंछ-सिर मारकर। कण्डों का बाड़ पार करके जब आप हमारे घर के आँगन में पहुँच जाओगे, आपको आम और पपीते, अमरूद के पेड़ दिखेंगे। मोतिया, रात की रानी, हर सिंगार भी होंगे। बहुत खुशबू आती है रात को। एक बड़े आम के पेड़ के नीचे मंजा डालकर मेरी नानी बैठी होगी। या तो साग-सब्जी काटती या फटे-पुराने कपड़े सीती। कभी नाड़े भी बुनती है और नवार भी। आपसे गले मिलेगी, पर जरा मोटी है उठने में देर लगेगी। तब तक मामी कुर्सी लाकर रक्खेगी। अगर उसने गद्दी न रक्खी तो मुझे बताना, उसे ठीक करूँगी।''

वह रुकने का नाम ही नहीं ले रही थी और मैं चुपचाप उसका मुँह तके जा रही थी कि तभी मेरे कानों में फिर उसके बोल पड़े,

''बड़ी मामी पहले खूह का ठण्डा पानी पिलायेगी, फिर रस का गिलास या मीठी लस्सी लायेगी। चाय हमारे यहाँ कोई नहीं पीता। आप कहेंगी तो सौंफ का काढ़ा बना देगी। अगले महीने आम बहुत होंगे। आपको आम भी खिलायेगी। क्या कन्ट्री है, हम तो आम खाने को भी तरस गये हैं।

मामियाँ आपके पास थोड़ी देर बैठेंगी, फिर अपने-अपने काम पर चली जाएँगी। दोनों मामियाँ बहुत अच्छी हैं। नानी को कुछ कहने की जरूरत नहीं पड़ती, बस इशारे से ही समझ लेती हैं। एक रसोई में चली जाएगी तो दूसरी माल को पानी-घास डालने।'' वह अपने-आप में मगन बोलती ही जा रही थी।

''जब नानी सब का हाल पूछेगी तो सब बताना। जब आस-पास कोई न हो तो कहना आपकी अमनजीत आपको बहुत याद करती है। कहती है मैं आपकी बहुत सेवा करूँगी। मालिश भी करूँगी, कपड़े भी धोऊँगी, गोहा भी थाप दूँगी। कभी जवाब नहीं दूँगी। पैसे भी नहीं माँगूँगी, पर आप मुझे वापस बुला लो। मेरा यहाँ मन नहीं लगता। मैं मर जाऊँगी।'' कहते-कहते उसका गला रुँध गया, वह दौड़कर बाथरूम की तरफ चली गई।

अंतिम बार स्कूल गई थी सबको अलविदा कहने, वह अपनी क्लास से मुझे देखती रही। जैसे ही मैं बाहर निकली, वह दौड़कर मेरे पीछे आ गई, मैंने उसे गले लगाकर कहा, ''अमन! खूब पढ़ना। मैं फिर आऊँगी।'' कहकर मैं कार में बैठने लगी तो उसने मेरा हाथ पकड़ लिया, ''मैम! नहीं मैम। तुसी ना जाओ। प्लीज़।'' कहकर उसने एक डायरी मेरे हाथ में पकड़ा दी, ''मेरा सनेहा जरूर दे देना।'' वह रोते-रोते बोल रही थी। मेरा हाथ भीग रहा था, उसे धीरे से छुड़ाकर दरवाजा बंद कर लिया। वह मेरे पीछे दौड़ी आ रही थी। दूर से देखा, वह नितान्त अकेली एक छोटे-से सरू के पेड़ के नीचे खड़ी थी, उस अजनबी देश के अजनबी लोगों के बीच।

हवाई जहाज़ की वापसी के दौरान डायरी खोलकर मैं पढ़ने लगी, वह कुछ कागज़ों को गोंद से चिपकाकर बनाई गई थी। अपने हाथ से बीच में अपने गाँव का पता, अपनी नानी को पत्र, अपनी मामियों को पत्र। कहीं-कहीं अनाड़ी हाथों से मेरी तस्वीर भी बनाई थी, नीचे लिखा था, 'यू कम बैक सून' अपने गाँव का खाका खींचा था, जहाँ कुछ लड़के पतंग उड़ा रहे थे। एक ने पीली पगड़ी पहन रक्खी थी। कुछ पंजाबी में लिखा था जो मैं पढ़ न सकी।

मैंने चौंक कर देखा, वह मेरी थाली उठाने आई थी मुझे हाथ धुलाने के बहाने बाहर ले जाते हुए बोली, ''मैम! आपने जरूर आना मेरे ब्याह में, अगले महीने। पता है मैम! इसका नाम जसिया है। इसने बाबा जी की सौंह खाई है कि यह मुझे इंडिया मेरे पिण्ड जरूर लेकर जाएगा। उसे आता देखकर वह लजाकर भाग गई और लंगर की भीड़ में खो गई।

अन्दर से शब्द-कीर्तन की आवाज़ निरंतर आ रही थी।

18, हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, जाखू,
शिमला (हिमाचल प्रदेश)
9218526218

रुबल नहीं आया –जगदीश बाली

मंगलू चाचा का मकान गाँव में से गुज़रते रास्ते से सटा हुआ था। मिट्टी, कंकर-पत्थर से बना मकान, छत बड़ी-बड़ी अलग-अलग आकार की स्लेटों को बेतरतीब जोड़कर बनी थी। बस दो मंज़िलें थी, धरातल और ऊपर वाली मंज़िल। ऊपर की मंजिल के आगे लकड़ी के तख्तों का खुला बरामदा था। बरामदे में एक चौरस खोल था। बरामदे में आने-जाने के लिए इस खोल से एक तंग लकड़ी की सीढ़ी लगी थी। इस सीढ़ी पर सर झुका के चढ़ना-उतरना पड़ता था। निचली मंजिल में तीन कमरे थे जिनकी ऊँचाई छः-सात फुट के आसपास थी।

मंगलू खेती-बाड़ी करते थे। इन्हीं तीन कमरों में से एक कमरे में उनके बैल बंधे होते थे। दूसरे कमरे में चाचा की रसोई थी। तीसरे कमरे में चाचा की छोटी सी दुकान भी थी। ऊपर के कमरों में चाचा और उसका बेटा रुबल सोते थे। एक कमरा मेहमानों के लिए भी था।

जब खेतों में काम न होता, तो चाचा बरामदे में बैठते और ग्राहक आने पर उतर कर दुकान पर आ जाते। चाचा बीड़ी-तंबाकू बेचते थे। साथ में बच्चों के लिए टॉफी और छोटी-छोटी मीठी गोल-गोल गोलियाँ भी, जिन्हें हम अंग्रेज़ी मिठाई कहते थे, रखी रहती थी। 10 पैसे में 9 आ जाती थीं। मंगलू चाचा कभी-कभी 10 भी दे दिया करते थे। दुकान पर कंचे और गुड़ भी रखा रहता था। गाँव के बच्चे कंचे खरीद कर निकट ही खेला करते थे और गुड़ का आंनद भी लेते। उस ज़माने में गुड़ किसी शाही मिठाई से कम नहीं होता था। बच्चे गुड़ को बड़े चाव व खुशी से एक दूसरों को चिढ़ा-चिढ़ा कर चाटते और खाते। बस इतना सा सामान बेचते थे मंगलू चाचा। कमाते कुछ नहीं थे, न कमाने का लालच था उनमें। लोगों व बच्चों का आना-जाना लगा रहता, उनके लिए इतना ही काफी था।

मंगलू का एक ही बेटा था रूबल। रूबल को जन्म देते समय मंगलू की पत्नी की मौत हो गई थी। पत्नी की मौत पर बहुत रोये थे मंगलू चाचा। पर इसे नियति मान कर बहुत लाड़-प्यार से रूबल को पाल-पोस रहे थे। यूँ कहिए रूबल के लिए मंगलू माँ-बाप दोनों थे। वह बड़े शौक से उसे पढ़ा लिखा रहे थे।

रूबल बड़ा हो गया था। मंगलू चाचा उसे डॉक्टर बनने शहर भेजना चाहते थे। मंगलू चाचा गुज़रते लोगों को राम-राम कहते और थोड़ी घड़ी बैठने का इसरार ज़रूर करते। कहते, ''अरे काम वाम तो होता रहेगा। तनिक बैठ कर कुछ गप-शाप करते हैं।'' वह उन्हें चाय, बीड़ी, तंबाकू भी पेश करते। किसी को रुपए-पैसों की ज़रूरत होती तो चाचा तुरंत दे देते।

मंगलू चाचा को यह सब बहुत अच्छा लगता। यह सब करने के बाद उनके दिल को सकून मिलता और चेहरे पर संतोष की आभा झलकती। राह से गुजरने वाला हर कोई मंगलू चाचा की आव-भगत, अपनेपन व स्नेह के कायल था। एक बार जब चाचा बीमार हुए थे, तो पूरा गाँव खड़ा हुआ था उनकी तीमारदारी के लिए। घर की ड्योढ़ी के साथ मंगलू चाचा ने एक पोस्टर मेख (कील) से फंसा कर लटका रखा था। इस पोस्टर में एक स्त्री हाथ जोड़ कर खड़ी दिखती थी और इस पर 'स्वागतम' लिखा होता-मंगलू चाचा की स्नेहशीलता और आव-भगत से बिल्कुल मिलता जुलता पोस्टर।

रूबल ने 12वीं कक्षा अच्छे अंकों में पास कर ली। पूरे 90 प्रतिशत अंक लिए थे उसने। मंगलू चाचा बहुत खुश थे। उन्हें अपना सपना साकार होते दिख रहा था। उन्होंने रूबल को प्री-मेडिकल टैस्ट की कोचिंग के लिए चंडीगढ़ भेज दिया। रूबल ने यह टैस्ट पास किया और उसे इंदिरा गाँधी मैडिकल कॉलेज शिमला में दाखिला भी मिल गया।

इधर रूबल डॉक्टरी का कोर्स पूरा करने के लिए मेहनत कर रहा था और उधर मंगलू चाचा उसके डॉक्टर बनने की बाट जोह रहे थे। वह छाती-फैला कर कहते, 'अपना बेटा डॉक्टर बनेगा। देखना मुझे बुढ़ापे में भी बीमार नहीं होने देगा।'

फिर रूबल ने डॉक्टरी का कोर्स भी पूरा कर लिया। जब वह घर आया था, तो पूरा गाँव उसे देखने के लिए उमड़ पड़ा था। आखिर गाँव का पहला डॉक्टर था रूबल। सब कहते, ''भई मंगलू चाचा की तपस्या रंग लाई है। कोई कमी नहीं रखी है उसने बेटे की परवरिश व लिखाई-पढ़ाई में।'' ऐसा लगा जैसे रूबल मंगलू चाचा का ही नहीं, बल्कि पूरे गाँव का बेटा है।

अब रूबल शहर से अपने बाबा के लिए एक सैल फोन भी लेता आया था। गाँव में यह नई चीज थी। उसने चाचा को इसका इस्तेमाल करना भी सिखा दिया।

इस बार रूबल जब शहर जाने लगा, तो मंगलू चाचा से

बोला, ''बाबा मैं अमेरिका जा कर डॉक्टरी करना चाहता हूँ, वहाँ बहुत पैसा है।'' यह सुन कर चाचा चुप हो गए। सोचने लगे कि बेटा अमेरिका चला जाएगा, तो वे बिल्कुल अकेले हो जाएँगे। रूबल समझ गया। वह बोला,

''बाबा, चिंता मत करो। तीन-चार साल में लौट आऊँगा। तब तक काफी पैसा कमा लूँगा। हर महीने तुमको फोन करता रहूँगा और हर साल आता रहूँगा। लौट कर यहीं डॉक्टरी करूँगा।''

चाचा कुछ देर कुछ न बोले। फिर मुकुराते हुए कहने लगे, ''ठीक है बेटा। कुछ सालों की तो बात है, सह लूँगा। यह भी।'' और रूबल शहर चला गया। कुछ दिनों बाद उसे अमेरिका से ऑफर भी आ गया। रूबल अब अमेरिका में डॉक्टरी कर रहा था। उधर मंगलू चाचा गाँव में अपना खेती बाड़ी का काम करते रहे और दुकान भी चलाते रहे। रूबल का फोन पहले तीन-चार महीने तो लगातार आता रहा। फिर फोन का सिलसिला कम होने लगा। एक साल बाद फोन आने लगभग बंद हो गए। एक दिन गाँव के एक लड़के के फोन पर रूबल का व्हाट्सएप पर मैसेज आया,

''बाबा से कहना, मेरी शादी की चिंता न करना। मैंने शादी कर ली है।'' अपनी गोरी मेम साहिबा का फोटो भी भेजा था उसने। बेचारे चाचा तो छोटा मोबाइल ही चला लेते थे गनीमत था। उस लड़के ने जब फोटो दिखाए और रूबल का संदेश पढ़कर सुनाया था तो चाचा बहुत दुखी हुए थे उस दिन। रूबल ने पहले बताया तक नहीं शादी के बारे में। फिर भी चाचा खुद को दिलासा देते रहे और मन को मनाते रहे, 'वक्त ही नहीं मिला होगा बताने का। व्यस्त जो इतना रहता है।'

पर मन ही मन बहुत दुखी रहने लगे थे चाचा। लोग रूबल के बारे में पूछते तो अपना दुख छुपाते हुए कहते, ''बस आने ही वाला है कुछ हफ्तों में।'' फिर एक दिन अचानक मंगलू चाचा बीमार हो गए। बेटे को सूचना भेजी गई, पर जवाब आया, ''अभी छुट्टी नहीं है। नज़दीक के किसी डॉक्टर को दिखा लो।'' यह जवाब पा कर पूरा गाँव सन्न था। सब आपस में बुदबुदाते, ''सोचा न था मंगलू का रूबल भी ऐसा निकलेगा। ये है आज के बच्चों को पढ़ाने-लिखाने का नतीज़ा। इससे अच्छे तो हम रहे भैया। पढ़ा न सके अपने बच्चों को, पर हैं तो हमारे पास ही न। दुख-सुख में साथ तो हैं।'' जब रूबल नहीं आया तो गाँव वाले मंगलू चाचा को शहर के डॉक्टर के पास ले गए। मंगलू चाचा को ट्यूमर हो गया था। ट्यूमर अंतिम स्टेज पर था। डॉक्टर ने कह दिया, ''बचना मुश्किल है। घर पर ही सेवा करो।''

अब गाँव वाले मंगलू को घर ले गए। खूब तीमारदारी की थी गाँव वालों ने मंगलू चाचा की। फिर एक सुबह मंगलू चाचा ये कहते हुए चल बसे, ''मेरा रूबल नहीं आया।''

रूबल को उसके पिता के देहांत की खबर दे दी गई। इस बीच गाँव वाले मंगलू चाचा के दाह संस्कार की तैयारी करने लगे। एक दूसरे से कहते, ''पता नहीं भैया! रूबल आता भी है या नहीं।'' उधर मंगलू चाचा की अर्थी अपने बेटे के कंधों का इंतज़ार कर रही थी। खैर गाँव वाले मंगलू चाचा की अर्थी ले कर शमशान घाट की ओर चल पड़े। एक के बाद एक अर्थी को कंधा देने आ रहा था, परंतु जिन कंधों को होना चाहिए था, वे अभी कहीं और व्यस्त थे। चाचा की अर्थी को चिता पर लिटा दिया गया और जल्द ही उनका मृत शरीर पंच तत्वों में विलीन हो गया। गाँव वाले अस्थियों को इकट्ठा कर रहे थे ताकि गंगा में बहायी जा सके, तभी रूबल अपनी मेम साहिबा के साथ पहुँच गया। उन्हें देख अस्थियाँ इकट्ठा कर रहे गाँव वाले कहने लगे, ''आ गए बेटा। तुम्हारे बाबा तो रहे नहीं, बस उनकी अस्थियाँ बची हैं। वक्त है तुम्हारे पास इन्हें गंगा में बहाने का?'' रूबल ने अस्थियाँ ले लीं, पर कोई जवाब नहीं दिया। गाँव वालों ने मंगलू चाचा का क्रिया-कर्म सब पूरे विधि-विधान व शास्त्रानुसार कर दिया। रूबल अस्थियाँ गंगा में बहाने के बाद जब गाँव लौटा तो उसके साथ शहर का एक बड़ा प्रॉपर्टी डीलर भी था।

रूबल ने चाचा की सारी ज़मीन व पुश्तैनी घर उसे 50 लाख में बेच दिया। इन्हीं 50 लाख में कहीं पुश्तैनी संस्कार व जज़्बात भी बिक गये। चाचा के खेतों की जगह अब बहुत बड़ा फार्म हाउस है। पुराने मिट्टी के घर की जगह एक आलीशान भवन है जिसके गेट पर 'स्वागतम' करती महिला के पोस्टर की जगह एक लोहे की तख्ती लटकी है, जिस पर लिखा है 'कुत्तों से सावधान।'

प्रवक्ता रा.व.मा. पाठशाला
ग्राम आहर, कुमारसेन, जिला शिमला
हिमाचल प्रदेश-171019
मो. 9418009808